राजस्थान लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

राजस्थान का इतिहास

स्वतंत्रता आंदोलन, जनजागरण एवं राजनैतिक एकीकरण

पाठ्यक्रम

स्वतंत्रता आंदोलन, जनजागरण व राजनितिक एकीकरण

1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम एवं राजस्थान

1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। अधिकांश अंग्रेज इतिहासकारों ने इसे ''सैनिक विद्रोह'' या ''गदर'' ही माना है जो उचित नही है। यह सही है कि इस संग्राम का प्रमुख कारण सैनिक असंतोष था। लेकिन वास्तविकता यह है कि अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का एक सामूहिक संग्राम था। राजस्थान मे भी अनेक स्थानों पर अंग्रेजों को संघर्ष करना पड़ा।

1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि एवं कारण

राजस्थान मे 1857 ई. की स्वतंत्रता संग्राम के अध्ययन से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि का अवलोकन किया जाना आवश्यक है। वस्तुत: यह संघर्ष 1818 ई. तक राजस्थान मे अंग्रेजी हस्तक्षेप तथा सर्वोपरिता की नीति का परिणाम था।

- **आपसी विवादो मे मध्यस्थता**- 1818 ई. की संधियों मे यह निश्चित किया गया था कि राज्यों के आपसी विवादो का निपटारा कंपनी सरकार ही करेगी। यह धारा राज्यों पर कंपनी की सार्वभौम सत्ता तथा राज्यों की अधीनस्थ स्थिति को प्रमाणित करती है। यदि किसी शासक ने इसका उल्लंघन किया तो उसके विरूद्ध सख्त कदम उठाये गये।
- **राजा तथा सामंतो का विवाद**- 1818 ई. संधियों के बाद राजाओं को सामंतों की सैनिक सेवा की आवश्यकता नही रही। अत: राजाओं ने सामंतों की शक्ति को नष्ट करना तथा उनकी जागीरे खालसा करना आरंभ कर दिया। ऐसी स्थिति मे सामंतों को अस्तित्व रक्षा हेतु अंग्रेजो की शरण मे आना पड़ा।

  यद्यपि 1818 ई. की संधि मे कंपनी सरकार स्पष्ट रूप से आंतरिक मामलों मे हस्तक्षेप नही करने का वचन किया था। लेकिन नरेशों तथा सामंतों के बीच विवादों ने अंग्रेजों को हस्तक्षेप का अवसर प्रदान कर दिया। अंग्रेजों ने राजा तथा सामंतों मे से जो पक्ष अंग्रेजों के हितो के अनुकूल था उसी का पक्ष लिया। अंग्रेजो ने कोटा राज्य से की गई संधि में झाला जालिम सिंह तथा उसके वंशजों को संपूर्ण सत्ता सौंप कर गृहयुद्ध के बीज बो दिये। उन्होने 1838 ई. मे अपने कृपा पात्र मदन सिंह झाला के लिए कोटा राज्य का अंग-भंग कर अलग झालावाड़ राज्य की स्थापना कर दी। इस नीति ने कोटा राज्य के जन साधारण को अंग्रेजो का शत्रु बना दिया।
- **उत्तराधिकार विवाद**- अंग्रेजों की सर्वोच्चता प्रदर्शित करने की भावना राजस्थान के राज्यों मे होने वाले उत्तराधिकार विवादों मे दिखाई पड़ती है। जहां कही भी इस प्रकार का विवाद उत्पन्न होता या गोद लेने के लिए अनुमति का प्रश्न उठता, कंपनी सरकार ने वहां अपना हस्तक्षेप कर दिया।

  1823 ई. में भरतपुर के राजा रणवीर सिंह की मृत्यु हो गई। उसका कोई पुत्र न होने के कारण उत्तराधिकार का विवाद उत्पन्न हो गया। सामंतों के समर्थन से दुर्जनशाल गद्दी पर बैठा किन्तु अंग्रेजों ने अपने स्वार्थो के कारण बलवत सिह का पक्ष लेकर उसे गद्दी पर बिठा दिया तथा वैध उत्तराधिकारी दुर्जनशाल बंदी बना लिया गया। 1815 ई. मे जब अलंवर का राजा बख्तावर सिंह की मृत्यु हो गई तब अंग्रेजों ने हस्तक्षेप करके राजसिंहासन बनेसिंह को दे दिया तथा प्रशासन बलवंत सिंह को दिलवा दिया। यही नही 1826 ई. मे अंग्रेजों ने राज्य का विभाजन कर तिजारा बलवंत सिंह को दिलवा दिया। अंग्रेजों ने जयपुर के राजा रामसिंह की अल्पवयस्कता के काल मे सर्वोच्चता का तर्क देकर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। स्पष्ट है कि अंग्रेजों ने सर्वोपरिता की आड़ मे अपने स्वार्थो की पूर्ति मात्र की थी, जिससे उनके प्रति असंतोष बढता जा रहा था।
- **वार्षिक खिराज**- 1818 ई. की संधियों द्वारा प्रत्येक राज्य द्वारा अंग्रेजों को दी जाने वाली वार्षिक खिराज (Tax) की राशि निर्धारित कर दी गई थी, यह खिराज अंग्रेजों ने राज्य के संसाधनों का आंकलन किए बिना मनमाने तरीके से निर्धारित किया था। खिराज तो मराठों द्वारा भी लिया जाता था। लेकिन वह राज्य की स्थिति के अनुसार तथा किश्तों मे लिया जाता था। जबकि कंपनी सरकार खिराज निर्धारित समय पर नकद ही लेती थी।

  वास्तव में खिराज अंग्रेजी सर्वोच्चता तथा देशी राज्यों की अधीनता का सूचक था। कम्पनी के अधिकारियों ने बलपूर्वक इसे वसूल भी किया। जिसके कारण राजस्थान का जनमानस अंग्रेजों से घृणा करने लगा।
- **अंग्रेजों द्वारा नियंत्रित सेना का गठन**- 1818 ई. की संधियों मे आवश्यकता पड़ने पर सैनिक सहायता दिया जाना निश्चय किया गया था, लेकिन कंपनी ने अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिये देशी राज्यों को अंग्रेज अधिकारियों द्वारा नियंत्रित सेना रखने हेतु बाध्य किया। कोटा कंटिनजेंट, जोधपुर लीजन, मेवाड-भील कोर आदि इसी प्रकार की पलटने थी। इस सेना का खर्च भी राजस्थान के राज्यों पर ही थोप दिया गया।

  राजस्थान के शासकों का इन सेवाओं पर कोई नियंत्रण नही था। इन सेनाओं मे राजस्थान की आदिवासी तथा लडाकू जातियों को भर्ती किया गया। इस प्रकार अंग्रेजों ने इन जातियों को अपने प्रति स्वामी भक्त बना लिया। यही नही इस सेनाओं की छावनी सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों पर स्थापित की गई। इस नीति के कारण सांमती सेना अनुपयोगी हो गई तथा बेरोजगारी बढ़ने लगी।
- **कंपनी सरकार के अधिकारी**- राजस्थान मे अंग्रेजों ने अपना नियंत्रण स्थापित करने की दृष्टि से अजमेर मे ए.जी.जी. की नियुक्ति की गई समस्त राजस्थान के राज्य इसके अधीन थे। इसे 13 तोपों की सलामी दी जाती थी। इसका दर्जा जोधपुर तथा जयपुर के शासकों से भी ऊपर था।

  ए.जी.जी. के अधीन विभिन्न राज्यों मे पोलिटिकल ऐजेन्ट थे। पोलिटिकल ऐजेन्ट तथा राज्य के बीच ऐजन्सी वकील होता था। ये सभी अधिकारी राज्यों के आंतरिक मामलो मे हस्तक्षेप करते थे। अनेक बार इन्होने राजा के विरूद्ध षड़यंत्र तथा गुटबंदी को भी प्रोत्साहित किया। राजस्थान की जनता ब्रिटिश सर्वोपरिता के प्रतीक कंपनी के इन प्रतिनिधियों से घृणा करने लगी थी।
- **साम्राज्यवादी आर्थिक शोषण**- राजनीतिक अराजकता के बाद भी 18वीं सदी का उत्तरार्द्ध राजस्थान के लिए आर्थिक सम्पन्नता का युग था। मरूभूमि वाले राज्यों को व्यापारिक मार्गो के कारण पर्याप्त आय होती थी। मध्य एशिया से उत्तर-पश्चिम भारत होकर पश्चिम समुन्द्र तटो तक व्यापारिक मार्ग राजस्थान से गुजरते थे। आगरा से राजस्थान होकर सिंध का मार्ग प्रमुख व्यापारिक मार्ग था। प्रत्येक राज्य मे महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग थे।

  राजस्थान से नमक, अफीम, रूई बड़ी मात्रा मे निर्यात होती थी। कर्नल टॉड स्वयं लिखते है कि यूरोप तथा कश्मीर की वस्तुऐं मेवाड मे सुलभ थी। जैसलमेर जैसे मरूभूमि मे स्थित राज्य को पारगमन से 3 लाख रूपये वार्षिक आय होती थी। व्यापारी राजा तथा

जागीरदारों को आवश्यकता होने पर धन उधार देते थे। हुण्डियों द्वारा धन भेजा जाता था। चुरू के मिर्जामल पोतदार की दिल्ली शाखा एक वर्ष मे 5000 हुण्डियों का लेनदेन करती थी।

1818 की संधियों के बाद अंग्रेजी आर्थिक नीति ने राजस्थान के आर्थिक, व्यापारिक ढांचे का सर्वनाश कर दिया। अंग्रेज सरकार ने पारगमन व्यापार अंग्रेजी क्षेत्र के व्यापार मार्गो से किए जाने की दिशा मे कार्य किये। इससे राजस्थान मे अंग्रेजी सामान की खपत बढ़ गई। दूसरा, इससे अंग्रेजों की व्यापारिक करों से आय बढ़ गई। अंग्रेजों ने राजस्थान से अंग्रेजी क्षेत्र मे आने वाले माल पर कर बढ़ा दिये। इससे राजस्थान के व्यापारिक मार्गो से माल लाना ले जाना महंगा होने लगा। अंग्रेजों ने बम्बई का विकास किया। जिससे राजस्थान होकर समुद्र तक जाने वाले व्यापारिक मार्ग स्वत: समाप्त हो गये। अंग्रेजों ने राजस्थान मे सैनिक उद्देश्यों से मार्ग विकसित किए। इससे राजस्थान के परंपरागत व्यापारिक नगर जो इन नये मार्गो पर नही थे, उजडने लगे। जैसलमेर, नागौर, पाली, मालपुरा का व्यापारिक महत्व समाप्त होने लगा।

जयपुर राज्य को 1820 ई. में सीमा शुल्को से होने वाले साढे पांच लाख रूपये की आय 1850 ई. मे घटकर एक लाख पचास हजार रूपये रह गई। जोधपुर, बीकानेर, कोटा, उदयपुर राज्यों की आय भी इसी प्रकार घटकर एक चौथाई रह गई।

- **व्यापारियों का निष्क्रमण**- 1818 ई. के बाद राजस्थान से व्यापारियों का निष्क्रमण आरंभ हुआ। अंग्रेजो ने एक ओर जहां राजस्थान के व्यापार को नष्ट किया वही उन्होने राजस्थान के व्यापारियों को अंग्रेजों क्षेत्रों मे रहने पर सुविधायें प्रदान की। उन्हें निशुल्क भूमि, उधार वसूली की गारंटी व माल परिवहन की सुरक्षा का आश्वासन दिया गया। परिणाम यह हुआ कि राजस्थान मे रोजगार के साधन समाप्त हो गये। व्यापारिक मार्गो की सुरक्षा के बदले सामंतो को व्यापारियों से होने वाली आय समाप्त हो गयी। साथ ही उनसे मिलने वाले रोजगार के स्त्रोत भी नष्ट हो गये।
- **अफीम नीति**- मेवाड़, कोटा, झालावाड़, प्रतापगढ़ प्रमुख अफीम उत्पादक राज्य थे। अफीम इन राज्यों की ही नही इनके व्यापारियों तथा कृषकों की संपन्नता का आधार थी। अंग्रेजों ने इन राज्यों से समझौतों के द्वारा अफीम के व्यापार पर नियंत्रण कर लिया। इन समझौतों द्वारा इन राज्यों को क्षतिपूर्ति की राशि निर्धारित कर दी गई। लेकिन यह राशि इन राज्यों को अफीम व्यापार से होने वाली आय से कम थी। इन राज्यों ने इस नीति का विरोध भी किया। लेकिन अंग्रेजो ने इससे परिवर्तन नही किया। अंग्रेजी नीति से तस्कर व्यापार को भी प्रोत्साहित मिला। अंग्रेजों ने किसानो को अफीम की खेती के लिये विवश किया। इसके फलस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन घटने लगा।
- **धार्मिक एवं सामाजिक परिदृश्य**- 1818 ई. की संधियों ने राजस्थान के जन-जीवन को चहुओर से प्रभावित किया। अंग्रेजों ने अपने साम्राज्यवादी हितो के पोषण को लिये प्रत्येक परंपरागत संस्था तथा नियमों मे टूटन पैदा कर दी।

बड़ी संख्या में ईसाई मिशनरियों ने राजस्थान मे प्रवेश किया। इन ईसाई प्रचारकों को कंपनी सरकार के अधिकारियो का पूर्ण सहयोग मिल रहा था। इनका उद्देश्य ईसाई धर्म प्रचार द्वारा ब्रिटिश शासन के समर्थक वर्ग की संख्या बढ़ाना था। लेकिन दूसरी और राजस्थान का शासक तथा सामंत वर्ग अंग्रेजों को प्रसन्न करने के लिये उनकी नीतियो मे सहायक बना हुआ था। इससे राजस्थान की धर्म भीरूजनता मे अंग्रेजों के प्रति घृणा बढ़ती जा रही थी। अंग्रेजो ने सामाजिक सुधारों के नाम पर राजस्थान के सामाजिक ढांचे को तोडने का कार्य किया। इससे राजस्थान का जनमानस अंग्रेजों के प्रति शंकालु हो उठा था।

इस विवेचना से स्पष्ट है कि 1857 ई. आते-आते राजस्थान आर्थिक दृष्टि से कंगाल हो चुका था। राजस्थान के लिए अंग्रेजों की आर्थिक नीतियां अधिक कष्टदायक प्रमाणित हुई। शासक तथा सामंत वर्ग भी अपनी स्थिति से संतुष्ट नही था। जनसाधारण अंग्रेजों के विरूद्ध आक्रोशित था। किन्तु नेतृत्वविहिनता के कारण 1857 ई. के पूर्व तक राजस्थान मे अंग्रेजो के विरूद्ध कोई बड़ा संघर्ष नही किया।

राजस्थान में क्रांति का प्रसार एवं उसके प्रमुख केन्द्र

1857 ई. मे भारतीयों द्वारा अंग्रेजी सत्ता को सशस्त्र चुनौती आधुनिक भारत के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। अधिकाश पाश्चात्य इतिहासकारो ने इसे सैनिक विद्रोह माना है परंतु इसे स्वीकार कर लेना इतिहास के साथ अन्याय ही होगा। मुगल सम्राट बहादुर शाह द्वितीय के साथ दुर्व्यवहार के कारण भारत के हिन्दू तथा मुसलमानों मे समान रूप से आक्रोश था। डलहौजी के गोद निषेध के सिद्धांत ने भारतीय शासक वर्ग को अंग्रेजों के प्रति शंकालु बना दिया था। भारतीय शासक तथा समान अंग्रेज अधिकारियों द्वारा लगातार हस्तक्षेप के कारण छटपटा उठे थे। यही नही अंग्रेजों ने सामाजिक सुधारों के नाम पर स्थापित रीति रिवाजों एवं परंपराओं से छेड-छाड़ आरंभ कर दी थी, ईसाई धर्म के प्रचार एवं मिशनरियों को संरक्षण दिए जाने के कारण भारतीय अंग्रेजी शासन से घृणा करने लगे थे। अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के कारण भारतीयों की गरीबी बढ़ रही थी।

भारत में स्वतंत्रता संग्राम का श्री गणेश ईस्ट इण्डिया कंपनी की सेनाओं के भारतीय सैनिकों ने किया। इसका तात्कालीन कारण एनफील्ड राइफले थी। इन राइफलों मे प्रयोग किए जाने वाले कारतूस की टोपी (केप) को दांतो से हटाना पड़ता था। इन कारतूसों को चिकना करने के लिये गाय तथा सूअर की चर्बी काम मे लाई जाती थी। इसका पता चलते ही भारतीय सैनिकों में अंग्रेज शासकों के विरूद्ध विद्रोह भड़क उठा। सैनिक यह समझ गये कि अंग्रेज उन्हें धर्म भ्रष्ट करना चाहते है।

यही कारण था कि स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ नियत तिथि से पहले ही हो गया। 26 फरवरी1857 ई. को बरहामपुर छावनी के सैनिको ने इन कारतूसों को प्रयोग मे लेने से मना कर दिया। इस सैनिक टुकडी को अंग्रेजों द्वारा भंग कर दिया गया। 29 मार्च 1857 ई. को बैरकपुर छावनी की 24वीं रेजीमेन्ट के सिपाही मंगलपाण्डें ने कारतूसों के प्रयोग का विरोध करते हुए अपने अंग्रेज अधिकारी को गोली मार दी। मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर फांसी दे दी गई। 10 मई को मेरठ छावनी के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। सैनिकों के इस विद्रोह को पेशवा नाना साहब, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, कुवंर सिंह तथा मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर ने नेतृत्व कर स्वतंत्रता संग्राम मे परिणत कर दिया।

संपूर्ण भारतीय उप महाद्वीप मे राजस्थान की विशेष स्थिति थी। भारतीय शासकों के नियंत्रण में इतना विशाल राज्य क्षेत्र अंयत्र नही था। राजस्थान मे कंपनी की सेना की 6 सैनिक छावनियां थी। अजमेर के निकट नसीराबाद, नीमच, देवली, ब्यावर, ऐरनपुरा तथा खैरवाड़ा।

यद्यपि राजस्थान मे जगह-जगह अंग्रेजी सेना के केन्द्र थे, लेकिन इनमे अंग्रेज सैनिक नही थे। देवली मे कोटा कन्टिजेन्ट, ब्यावर मे मेर रेजीमेन्ट, ऐरनपुरा मे जोधपुर लीजन, खैरवाड़ा मे भील कोर तथा नसीराबाद मे बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री थी। इन सभी छावनियों मे भारतीयों सैनिकों की संख्या लगभग 5000 थी।

राजस्थान के ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स को मेरठ के संघर्ष की सूचना 19 मई, 1857 ई. को प्राप्त हुई। सूचना मिलते ही उसने राजस्थान के सभी के सभी शासकों को पत्र लिखकर निर्देश दिया कि वह अपने-अपने राज्यों मे शांति व्यवस्था बनाए रखें, क्रांतिकारियों को अपनी सीमाओं मे प्रवेश न करने दें तथा यदि प्रवेश कर लिया हो, तो उन्हें तत्काल बंदी बना लिया जावे। उसने यह भी निर्देश दिया कि ये राज्य अपनी सेनाओं को अंग्रेजी भारत की सीमाओं के निकट रखे ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता ली जा सके।

राजस्थान के सभी राज्यों के शासकों ने ए.जी.जी. के इस निर्देश का पालन तत्परता से किया। जोधपुर तथा मेवाड़ के राजाओं ने अपनी संपूर्ण सैन्य शक्ति समर्पित करने के प्रस्ताव भेजे। उनका अनुकरण अन्य शासको ने भी किया।

मुख्य घटनाक्रम

1. नसीराबाद – 27 मई 1857 को यूरोपीय सेना व तोप माँगवाने की गुप्त योजना से भारतीयों में असन्तोष फैल गया जिसके कारण 28 मई को 15वीं नेटिव इंफेन्ट्री के सिपाही बख्तावर सिंह ने **कर्नल पैनी व न्यूबरी** के टुकड़े-टुकड़े करके क्रान्ति को बिगुल बजा दिया।

2. नीमच – 2 जून, 1857 को सैन्य अधिकारी कर्नल एबोट ने नसीराबाद के विद्रोह की सूचना मिलते ही सैनिकों को कर्तव्य पालन की शपथ दिलाई गई लेकिन इसका विरोध मोहम्मद अली बेग ने अंग्रेजों से कर्तव्य पूछकर किया।

– 3 जून, 1857 को सम्पूर्ण छावनी के घिर जाने पर अधिकारियों को डूंगला गाँव के रूंगाराम किसान के घर जाकर शरण लेनी पड़ी और पॉलिटिकल एजेन्ट केप्टन शावर्स को मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह ने जगमन्दिर व जग निवास में शरण दी।

3. देवली – जून 1857 में नीमच के क्रान्तिकारियों ने देवली को आग के हवाले कर दिया और ब्रिटिश अधिकारियों को जहाजपुर (भीलवाड़ा) में शरण लेनी पड़ी।

4. ऐरनपुरा – 23 अगस्त 1857 को मोती खाँ, तिलक राम व शीतलप्रसाद ने ऐरनपुरा छावनी में क्रान्ति का बिगुल बजा दिया **''चलो दिल्ली और मारो फिरंगी''** का नारा देते हुए दिल्ली की ओर प्रस्थान किया और रास्ते में आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह चम्पावत का नेतृत्व प्राप्त किया।

5. आउवा – आउवा जोधपुर से 80 कि.मी. दूर पाली का गाँव था यहाँ कि जनता तत्कालीन मारवाड़ शासक तख्तसिंह के अत्याचारों से अप्रसन्न थी। इसलिए ऐरनपुरा के क्रान्तिकारियों को आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह आलणिवास ठाकुर अजीत सिंह तथा अन्य छोटे-छोटे जागीरदारों की सैन्य सहायता प्राप्त की।

विशेष – परिणामतः विद्रोह को दबाने के लिए A.G.G. लारेन्स बम्बई की 12वीं रेजिमेन्ट तथा तख्तसिंह की सेना सहित आउवा की ओर पहुँचा और 8 सितम्बर, 1857 को अंग्रेजों की संयुक्त सेना तथा क्रांतिकारियों के मध्य **बिठुर/बिथौरा** का युद्ध हुआ जिसमें कुशाल सिंह चम्पावत के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी सेना/राजकीय सेना के 76 व्यक्तियों को मार गिराया तथा उनकी तोपों वे गोला बारूद पर कब्जा कर दिया।

– 18 सितम्बर, 1857 को बिठुरा की पराजय के पश्चात् A.G.G. लॉरेन्स पॉलिटिकल एजेंट जी.एफ. मोकमेसन के साथ सेना सहित आउवा पहुँचा और इस भीषण युद्ध में कई सैनिक व ब्रिटिश अधिकारी मारे गये तथा जी. ऐफ. मोकमेसन का सिर धड़ से अलग करके विजय के प्रतीक के रूप में आउवा के किले के दरवाजे पर लटका दिया जिसे सूचना मिलते ही चम्पावत ने ससम्मान अन्तिम संस्कार किया।

– 20 जनवरी 1858 को तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड केनिंग ने ब्रिगेडियर होम्स के नेतृत्व में विशाल सेना भेजी और तख्तसिंह की संयुक्त सेना के साथ आउवा पर आक्रमण कर दिया।

– 5 दिन घेरा डालने के पश्चात् नियुक्त किलेदार को रिश्वत देकर अंग्रेज किले में घुसने में सफल हो गए लेकिन कुशाल सिंह चम्पावत वर्षा व रात का फायदा उठाकर सलूम्बर के पहाड़ों में भाग गया। हताश अंग्रेजों ने चार दिन की भयंकर लूटपात व मारकाट के बाद आउवा के किले को जनशून्य कर दिया। तथा अपने साथ चम्पावत की कुलदेवी 54 हाथ वाली और 10 सिर वाली **सुगाली माता** की मूर्ति अजमेर ले गये जो वर्तमान में पाली संग्रहालय में है।

नोटः – कुशालसिंह को सलूम्बर के रावत केसरीसिंह चूडावत ने शरण दी थी और कुशालसिंह के विद्रोह की जाँच के लिये 'टेलर आयोग' गठित किया गया।

– 1870 में कुशालसिंह चम्पावत के पुत्र देवीसिंह चम्पावत को आउवा की जागीर पुनः प्राप्त हो गई।

नोटः – उल्लेखनीय है 18 सितम्बर 1857 को लड़े गये आउवा के युद्ध को **'चैलावास का युद्ध'** कहा जाता है तथा आउवा व अंग्रेजों के मध्य हुए संघर्ष को **'काले गोरे का युद्ध'** भी कहा जाता है।

6. कोटा – कोटा में सैनिक छावनी रही थी यहाँ विद्रोह राजकीय सेना व आम जनता ने किया।
- कोटा के पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन थे जो 12 अक्टूबर, 1857 को झालावाड़ व बून्दी की राजकीय सेना सहित कोटा पहुँच गये।
- कोटा क्रांतिकारियों का नेतृत्व पूर्व सरकारी वकील **लाला जयदयाल, मेहराव खाँ** कर रहे थे।
- 15 अक्टूबर, 1857 को 2000 जाबांज क्रांतिकारियों में से दो भवानी व नारायण ने पॉलिटिकल एजेन्ट बर्टन व एक डॉक्टर शेडलर व भारतीय ईसाई शैविल की हत्या कर दी।
- बर्टन के सिर को काटकर सम्पूर्ण कोटा में घुमाया तथा कोटा के शासक महाराव रामसिंह को नजरबंद कर दिया तथा छः माह तक कोटा पर क्रान्तिकारियों का अधिकार रहा।
- 30 मार्च, 1858 को मेजर जनरल रॉबर्ट्स के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने क्रान्तिकारियों को हराने में सफलता प्राप्त की तथा जयदयाल व मेहराव खाँ को फाँसी देदी गई।

नोटः
- उल्लेखनीय राजपूताना में अंग्रेजों के विरूद्ध कोटा जैसा सुनियोजित व सुनियंत्रित संघर्ष राजस्थान में अन्यत्र कही नहीं हुआ कोटा एकमात्र रियासत थी जहाँ क्रान्तिकारियों ने शासक को नजरबंद करके शासन की बागडोर अपने हाथ में ली।
- करौली के महारावल **मदनपाल** ने कोटा के शासक महारावल **रामसिंह द्वितीय** को क्रांतिकारियों की कैद से मुक्त कराया।

7. धौलपुर – अक्टूबर 1857 में ग्वालियर व इन्दौर के क्रान्तिकारियों ने राव रामचन्द्र व हीरालाल के नेतृत्व में स्थानीय सैनिकों की सहायता से शासन पर अधिकार कर लिया और दो माह तक धौलपुर के शासक को अधिकार विहीन रखा।
- दिसम्बर 1857 को पटियाला की सेना ने आकर विद्रोह समाप्त किया।

नोटः
- उल्लेखनीय है धौलपुर का विद्रोह एकमात्र ऐसा विद्रोह रहा है जिसने क्रान्तिकारियों के हाथ में रही और क्रान्ति को दबाने का कार्य भी राज्य के क्रान्तिकारियों ने किया।
- उल्लेखनीय है कि **रामचन्द्र-हीरालाल** धौलपुर की तोप को आगरा लेकर भाग गये।

8. टोंक – जून, 1857 में तत्कालीन नबाब व अंग्रेजों के चहेते वजीर खाँ के विरूद्ध मामा मीर आलम खाँ भाई मोइनुद्दीन व खान बहादुर ने विद्रोह कर दिया लेकिन उन्हें मार दिया गया तत्पश्चात् नीमच छावनी के क्रान्तिकारियों को स्थानीय लोगों की सहायता से नवाब का किला घेरकर बकाया वेतन वसूल किया और दिल्ली की ओर चल गये।

अन्य स्थान

1. करौली – करौली में **मोहम्मद खाँ** के नेतृत्व में विद्रोह हुआ जिसने हिण्डौन की पहाड़ी पर विद्रोह किया गया, लेकिन करौली के शासक मदनपाल ने मोहम्मद खाँ की हत्या करवाकर अंग्रेज भक्ति का परिचय दिया।

2. अजमेर – 9 अगस्त, 1857 को अजमेर के कारागार में विद्रोह हुआ और 60 कैदी भाग गए।

3. भरतपुर – भरतपुर में तत्कालीन समय पर अल्पवयस्क जसवन्त सिंह का शासन था इसलिए पॉलिटिकल ऐजेन्ट मोरिसन ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ले रखी थी।
- यहाँ 31 मई, 1857 को क्रान्तिकारियों ने 20 अंग्रेज अधिकारियों को बन्धक बना लिया तथा कुछ दिनों के लिए शासन की बागडोर हाथ में ले ली।

4. अलवर – 1857 की क्रांति के समय क्रांतिकारियों ने आगरा के दुर्ग में अंग्रेज अधिकारियों (परिवारों) को कैद कर लिया। जिसे रिहा करवाने के लिये विनयसिंह विशाल सेना लेकर अलवर से रवाना हुआ। लेकिन 11 जुलाई, 1857 को अचनेरा (भरतपुर) के पास विद्रोहियों ने विनयसिंह का सारा खजाना लूट लिया।

5. आबू – 21 अगस्त, 1857 को विद्रोहियों ने आबू के पॉलिटिकल एजेन्ट एक्लेजेन्डर व A.G.G. लॉरेन्स को खिड़कियों से गोली चलाकर बुरी तरह घायल कर दिया और खजाना लूटकर ऐरनपुरा भाग गये।

तांत्या टोपे का राजस्थान आगमन

1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम मे तांत्या टोपे का राजस्थान आगमन महत्वपूर्ण घटना है। तांत्या टोपे की इस यात्रा ने जागीरदारों सैनिकों तथा जन-साधारण में उत्तेजना का संचार किया। ग्वालियर मे असफल होने पर तांत्या टोपे सहायता की आशा मे हाड़ौती होते हुए जयपुर की ओर बढ़ा। सहायता न मिलने पर वह लालसोट होते हुए टोंक आ गया। ब्रिगेडियर होम्स उसका पीछा कर रहा था। टोंक मे सेना ने उसका समर्थन किया। यहां से वह सलूंबर चला गया। सलूंबर के रावत ने उसकी सहायता की। अंग्रेजों ने तांत्या टोपे को 9 अगस्त 1858 को हराया पांच दिन बाद बनास नदी के तट पर पुनः तांत्या टोपे की पराजय हुई। इसके बाद तांत्या हाड़ौती मे आ गया तथा उसने झालरापाटन पर अधिकार कर लिया। स्थानीय जनता ने उसे पूर्ण सहयोग दिया। लेकिन इसके बाद सितंबर माह मे ही अंग्रेजों ने उसे दो बार हराया। विवश तांत्या टोपे राजस्थान से चला गया।

दिसम्बर 1858 ई. मे तांत्या टोपे पुनः राजस्थान आया तथा बांसवाड़ा पर अधिकार कर लिया। यहां से वह संलूबर आया। यहां उसे पूरी सहायता दी गई। टोपे दौसा तथा सीकर भी गया। यहां अंग्रेजी सेनाओं ने उसे पराजित कर खदेड़ दिया। नरवर के जागीरदार मानसिंह ने विश्वासघात करके तांत्यां टोपे को अंग्रेजो के हाथों पकड़वा दिया। अप्रैल 1859 ई. मे तांत्या टोपे को फांसी दे दी गई।

तांत्या टोपे को सहायता देने के आरोप में अंग्रेजों ने सीकर के सामन्त को बंदी बना लिया तथा 1862 ई. में उसे मृत्युदण्ड दे दिया।

क्रांति के समय अंग्रेजों का साथ देने वाली विभिन्न रियासती

रियासत	शासक
जयपुर	रामसिंह द्वितीय
जोधपुर	तख्तसिंह
कोटा	रामसिंह
उदयपुर	महाराणा स्वरूप सिंह
अलवर	विनयसिंह
करौली	मदनपाल
धौलपुर	भगवन्त सिंह
टोंक	नबाव वजीर खाँ

क्रांतिकारी स्थलों पर निम्न तिथियों को क्रांति का आगाज किया गया

रियासत	शासक
नसीराबाद	28 मई 1857
नीमच	3 जून 1857
ऐरनपुर	23 अगस्त 1857
बिठुरा	8 सितम्बर 1857
आउवा	18 सितम्बर 1857
आउवा द्वितीय	20 जनवरी 1858
कोटा	18 अक्टूबर 1857
टोंक	जून 1857

स्वतंत्रता संग्राम की असफलता के कारण

21 सितम्बर 1857 ई. को मुगल बादशाह बहादुर शाह उनकी बेगम जीनत महल तथा उनके पुत्रों को बंदी बनाकर रंगून भेज दिया गया। 1858 ई. के मध्य मे क्रांति की गति काफी धीमी हो चुकी थी। तांत्या टोपे की गिरफ्तारी के साथ ही भारतीयों का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम राजस्थान मे समाप्त हो गया।

राजस्थान मे इस समय तीव्र ब्रिटिश विरोधी भावना दिखाई दी। जनता ने अंग्रेजों के विरूद्ध घृणा का खुला प्रदर्शन किया। महाराणा से मिलने जाते समय उदयपुर की जनता ने कप्तान शावर्स को खुलेआम गालियॉ दी। जोधपुर की सेना ने कप्तान सदर लैण्ड के स्मारक पर पत्थर बरसाये। कोटा, भरतपुर, अलवर तथा टोंक की जनता ने शासकों की नीति के विरूद्ध क्रांतिकारियों का साथ दिया। फिर भी राजस्थान में क्रांति असफल हुई। इसके अधोलिखित कारण थे-

नेतृत्व का अभाव

राजस्थान 18 राज्यो मे विभाजित था। अनेक स्थानों पर क्रांति होने पर भी विद्रोहियो का कोई सर्वमान्य नेतृत्व नही था। राजपूत शासकों ने मेवाड़ के महाराणा से सपर्क किया। किन्तु महाराणा ने इस संबंध में समस्त पत्र व्यवहार अंग्रेजों को सौंप दिया। मारवाड़ के सामंतों तथा सैनिको ने मुगल बादशाह के नेतृत्व मे संघर्ष का प्रयास किया। किंतु मुगल बादशाह दिल्ली से बाहर राजस्थान मे नेतृत्व प्रदान नही कर सका। फलतः क्रांतिकारी एकजुट होकर संघर्ष नही कर सके तथा उन्हें असफल होना पड़ा।

समन्वय का अभाव

राजस्थान में क्रांति का प्रस्फुटन अनेक स्थानों पर हुआ। लेकिन क्रांतिकारियों के बीच समन्वय का अभाव था। नसीराबाद, नीमच, आऊवा तथा कोटा के क्रांतिकारियों मे संपर्क तथा तालमेल नही था। यही कारण है कि भारतीयों को सफलता प्राप्त नही हुई।

रणनीति का अभाव

क्रांतिकारियों के प्रयास योजनाबद्ध नही थे। विद्रोह के पश्चात उनमे बिखराव आता चला गया। दूसरी ओर अंग्रेजी ने योजनाबद्ध ढंग से क्रांतिकारियों की शक्ति को नष्ट किया। अंग्रेजी सेनाओं का नेतृत्व कुशल सैन्य अधिकारी कर रहे थे। उनकी रसद तथा हथियारों की आपूर्ति संपूर्ण भारत से हो रही थी। जबकि क्रांतिकारी सैनिकों के पास साधनों का अभाव था। उदाहरणार्थ, कोटा तथा धौलपुर के शासकों को क्रांति को दबाने के लिये अंग्रेजों के अतिरिक्त करौली तथा पटियाला से सहायता दी गई थी।

शासकों का असहयोग

राजस्थान के शासकों का सहयोग नही मिलना भी असफलता का प्रमुख कारण था। यही नही, राजस्थान के अधिकांश शासकों ने न केवल राजस्थान बल्कि राजस्थान के बाहर भी अंग्रेजों को पूर्ण सहायता प्रदान की। शासकों की इस देशद्रोही नीति ने उखड़ी हुई ब्रिटिश सत्ता की पुर्नस्थापना मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम

1857 ई. का क्रांति के परिणाम दूरगामी थे। इस क्रांति ने अंग्रेजों की इस धारणा को निराधार सिद्ध कर दिया कि मुगलो एवं मराठो की लूट से त्रस्त राजस्थान की जनता ब्रिटिश शासन की समर्थक है-

देशी राज्यों के प्रति नीति परिवर्तन

राजस्थान के शासकों ने क्रांति के प्रवाह को रोकने हेतु बांध का कार्य किया था। अंग्रेज शासकों ने यह समझ लिया कि भारत पर शासन की दृष्टि से देशी राजा उनके लिये उपयोगी है। अतः अब ब्रिटिश नीति मे परिवर्तन किया गया। शासकों को संतुष्ट करने हेतु ''गोद निषेध'' का सिद्धांत समाप्त कर दिया गया। राजाओं की अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा का प्रबंध किया जाने लगा। उनकी सेवाओं के लिये उन्हें पुरस्कार तथा उपाधियां दी गई, ताकि उनमे ब्रिटिश ताज तथा पश्चिमी सभ्यता के प्रति आस्था मे वृद्धि हो सके।

सामंतों की शक्ति नष्ट करना

विद्रोह काल में सामंत वर्ग ने अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष किया। फलतः विद्रोह समाप्ति के बाद अंग्रेजो ने सामंत वर्ग की शक्ति समाप्त करने की नीति अपनाई। सामंतों द्वारा दी जाने वाली सैनिक सेवा के बदले नगद राशि ली जाने लगी। फलतः सामंतो को अपनी सेनायें

भंग करनी पडी। सामंतों से न्यायालय शुल्क लिया जाने लगा। उनके न्यायिक अधिकार छीन लिये गये, उनका राहदारी शुल्क वसूली का अधिकार भी समाप्त कर दिया गया। ऐसे कानून बनाए गये जिनसे व्यापारी वर्ग अपना ऋण न्यायालय द्वारा वसूल कर सके। इस नीति के फलस्वरूप व्यापारी वर्ग तथा जनता पर सामंतों का प्रभाव समाप्त होने लगा।

नौकरशाही मे परिवर्तन

सभी राज्यों के प्रशासन मे महत्वपूर्ण पदो पर सामतों का अधिकार था। क्रांति के बाद सभी शासकों ने सामंतो को शक्तिहीन करने तथा प्रशासन पर अपना नियंत्रण बढ़ाने के लिए नौकरशाही मे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त, अनुभवी एवं स्वामी भक्त व्यक्तियों को नियुक्ति प्रदान की। इसके फलस्वरूप राजभक्त, अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग का विकास हुआ।

यातायात के साधन

संघर्ष के समय में अंग्रेजों को सेनायें एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने मे कठिनाई का सामना करना पड़ा। विद्रोह के पश्चात सैनिक तथा व्यापारिक हितों को ध्यान मे रखते हुए यातायात के साधनों का विकास किया गया। नसीराबाद, नीमच, डीसा तथा देवली को अजमेर तथा आगरा से सड़कों द्वारा जोड दिया गया। रेल कम्पनियों को रेल मार्ग निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया गया। अंग्रेज सरकार ने देशी राज्यों पर भी सड़को तथा रेलों के निर्माण हेतु दबाव डाला इसके फलस्वरूप यातायात के साधनों का त्वरित विकास हुआ।

सामाजिक परिवर्तन

अंग्रेजी सरकार ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का विस्तार किया। दूसरी ओर अंग्रेजी शिक्षा का महत्व बढ़ जाने के फलस्वरूप मध्यम वर्ग का विकास हुआ। इस वर्ग ने अंग्रेजी शिक्षा लेकर प्रशासन तथा अन्य क्षेत्रो मे महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। अंग्रेजों ने अपने व्यापारिक स्वार्थो के कारण वैश्य वर्ग को संरक्षण प्रदान किया। कानान्तर मे ब्राह्मण तथा राजपूत वर्ग का प्रभाव कम होता चला गया।

क्रांति का स्वरूप

यद्यपि राजस्थान मे क्रांति का प्रारंभ सेना द्वारा किया गया, लेकिन इसे पूर्ण रूप से सैनिक विद्रोह कहना उचित नही होगा। मेलीसन इसे **''शासकों के विरूद्ध सामंती प्रतिक्रिया''** मानते है। यह ठीक है कि सामंत अपने स्वार्थो के कारण इसमे सम्मिलित हुए थे। लेकिन जन साधारण का एक ही उद्देश्य था अंग्रेजो को देश से निकाल देना।

राजस्थान मे क्रांति अंग्रेजों के विरूद्ध सभी वर्गो मे व्याप्त रोष का परिणाम था। नसीराबाद, नीमच तथा ऐरनपुरा का संघर्ष भारत व्यापी स्वतंत्रता संग्राम का ही अंग था। जन साधारण ने भी इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया था। जन आक्रोश के कारण ही भरतपुर के राजा ने मोरीसन को राज्य छोड़ देने का परामर्श दिया था। कोटा के महाराव ने भी इसी कारण मेजर बर्टन को कोटा नही आने के लिए कहा था। जन आक्रोश के कारण ही टोंक के नवाब ने अंग्रेजों को अपने राज्य की सीमा से नही गुजरने के लिए कहा था इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि राजस्थान मे शासकों को छोड़कर सभी वर्गो ने अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष मे भाग लिया। राजस्थान के जन साधारण ने भारत व्यापी स्वतंत्रता संग्राम मे अपनी और से यथाशक्ति सहयोग प्रदान किया। नि:स्संदेह 1857 ई. का संघर्ष राजस्थान मे अंग्रेजों की दासता से मुक्ति का संग्राम था।

राजस्थान में 1857 के शहीद

शहीद का नाम	विप्लव में योगदान
अब्बाव बेग मिर्जा	कोटा राज्य की सेना मे कार्यरत (दफादार)अब्बास बेग मिर्जा ने ब्रिटिश सेना और कोटा के महाराव की सेना के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े।
अकबर खाँन	मेहराव खाँन का सहयोगी, इन्होने ब्रिटिश सरकार और कोटा राज्य के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े। 1858 में बंदी बनाए गए और मार डाले गए।
अलीम खाँन, हफीज उन-उमर	टोंक के नवाब क विरूद्ध किए गए आक्रमण का संगठनकर्ता, अंग्रेजों के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े और वीरगति को प्राप्त हुए।
भैंरू सिंह जोधा	गेराओ का जागीरदार भैरूसिंह आउवा के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ।
गुल मोहम्मद	कोटा राज्य की सेना का जीमदार एवं विद्रोही नेता मेहराव खाँन का छोटा भाई, ब्रिटिश सेना व कोटा महाराव की सेना के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े।
गुल मोहम्मद, निशान्ची हाफिज	टोंक राज्य की सेना के बन्दूकची, टोंक से दिल्ली की ओर जाने वाली विद्रोही सेना के साथ अंग्रेजो के विरूद्ध युद्ध लड़ा और दिल्ली मे वीरगति को प्राप्त हुए।
हरदयाल भटनागर	कोटा राज्य में कार्यरत श्री हरदयाल भटनागर ने जनरल राबर्ट की सेना के विरूद्ध विद्रोही सेना का नेतृत्व किया और वीर गति को प्राप्त हुए।
हरनाथसिंह ठाकुर	जनरल लारेन्स के विरूद्ध आऊवा युद्ध मे भाग लिया और वीरगति को प्राप्त हुए।
हीरासिंह	विद्रोहियो के साथी हीरासिंह ने कोटा राज्य मे ब्रिटिश सेना और कोटा के महाराव की सेना के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े और वीरगति को प्राप्त हुए।
लाला जायदयाल भटनागर	कोटा राज्य के विद्रोहियो का संगठनकर्ता और प्रमुख नेता, कोटा महाराव के द्वारा इनकी गिरफ्तारी के निए 10 हजार रूपए की घोषणा। 1860 में अंग्रेजो द्वारा फांसी।

जियालाल	निम्बाहेड़ा के मुख्य पटेल, कप्तान शावर्स के आदेशों का पालन न करना, विद्रोही सेना का गठन, अंग्रेजों के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े, बंदी बनाए गए और मार डाले गए।
कामदार खाँन	कोटा राज्य मे पाटनपोल युद्ध मे कोटा के महाराव की सेना के विरूद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
खंवास खाँन उर्फ एवाज खांन	15 अक्टूबर, 1857 को इन्होने ब्रिटिश एजेंट के घर पर किए गए आक्रमण का नेतृत्व किया। एजेट की हत्या कर दी गई। अत: अंग्रेजों ने इन्हे फांसी दे दी।
मेहराब खाँन	कोटा राज्य की सेना के रिसालदार ने अक्टूबर, 1857 के युद्ध मे विद्रोहियो का साथ दिया। 1859 में बंदी बनाए गए और 1860 में फांसी पर लटका दिया गया।
मोहम्मद खाँन	कोटा राज्य में रिसालदार के पद पर कार्यरत मोहम्मद खांन ने विद्रोहियों का साथ दिया और अंग्रेजों द्वारा बंदी बना लिए गए तथा मार डाले गए।
मुनव्वर खाँन	टोंक राज्य की सेना के सिपाही मुनव्वर खांन ने विद्रोही सेन के साथ मिलकर ब्रिटिश सेना का विरोध किया और दिल्ली में लड़ते हुए मारे गए।
नवी शेर खाँ	कोटा राज्य की सेना के इस सिपाही ने विद्रोहियों को अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए और अंग्रेजी सेना के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े। मार्च, 1858 में अंग्रेजों ने इन्हें गोली से उड़ा दिया।
नसीर मोहम्मद	कोटा सेना के अफसर नसीर मोहम्मद ने अंग्रेजी सेना के विरूद्ध अनेक युद्ध लड़े और कोटा के किले पर किए गए आक्रमण का नेतृत्व करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।
रोशन बेग	कोटा राज्य की सैनिक क्रांति के प्रमुख नेता, इन्होने कोटा राज्य की सेना के संपूर्ण अस्त्र-शस्त्र विद्रोहियों को सौंप दिए। कैथूनीपोल युद्ध मे जनरल राबर्ट के विरूद्ध लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।
सफदर का खाँन	दिल्ली के मुगलकोट मे कार्यरत सफदर खांन ने विद्रोहियो का पूर्ण सहयोग किया, अंग्रेजों ने इन्हें बंदी बना लिया और फांसी दे दी।
सरदार अली	कोटा राज्य की सेना के सहायक सेनाधिकारी सरदार अली ने 15 अक्टूबर, 1857 के युद्ध में विद्रोहियों का साथ दिया और लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।
शक्तिदान ठाकुर	आऊवा युद्ध में विप्लवकारियों का समर्थन, कारावास की अवधि में मृत्यु।

राजस्थान में जन आंदोलन एवं स्वतंत्रता संग्राम

यद्यपि 1857 की क्रांति मे राजस्थान की भूमिका अन्य राज्यों की अपेक्षा सक्रिय नही रही फिर भी ब्रिटिश सरकार ने राजाओं के माध्यम से यह पूरा प्रयास किया कि किसी प्रकार की राष्ट्रवादी भावनायें यहाँ न पनपने पायें। राजस्थान के परंपरावादी सामंती समाज ने भी प्रगतिवादी प्रवृत्तियों को अधिक प्रश्रय नहीं दिया। फिर भी यहाँ के लोगों मे स्वाधीन होने की प्रबल आकांक्षा किसी भी शक्ति द्वारा बाधित नही हो पाई। आत्म सम्मान व स्वतंत्रता प्रेस यहाँ के निवासियों के चरित्र का प्रमुख हिस्सा है और अति दमनात्मक नीतियों के बावजूद अपने अधिकारों के लिये स्वतंत्रता प्रेमी संघर्ष करते रहे है।

राजस्थान मे जनजागृति के कारण

- **स्वामी दयानंद सरस्वती व उनका प्रभाव**- आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द स्वदेशी व स्वराज का शंख फूंकने वाले पहले समाज सुधारक थे। 1865 ई. में वे करौली, जयपुर व अजमेर आये। उन्होने स्वधर्म, स्वदेशी, स्वभाषा व स्वराज्य का सूत्र दिया। जिसे शासक व जनता ने संहर्ष अनुमोदित किया। 1888-1890 ई. के बीच आर्य समाज की शाखायें राजस्थान मे स्थापित की गई एवं ''वैदिक यंत्रालय'' नामक प्रिटिंग प्रेस अजमेर मे लगाई गई। 1883 ई. मे स्वामी जी ने उदयपुर में ''परोपकारिणी सभा'' की स्थापना की, जो बाद में अजमेर स्थानान्तरित हो गई। इस प्रकार स्वराज्य के लिये प्रेरणा देने का प्रारम्भिक कार्य आर्य समाज ने किया।
- **समाचार पत्रों व साहित्य का योगदान**- राजनीतिक चेतना के प्रसार में समाचार पत्रों का योगदान उल्लेखनीय है। 1885 ई. मे राजपूताना गजट, 1889 ई. में राजस्थान समाचार, प्रारम्भिक समाचार पत्र थे। 1920 ई. में पथिक ने ''राजस्थान केसरी'' का प्रकाशन आरम्भ किया, जिसने अंग्रेजी नीतियों के खिलाफ अपना स्वर ऊँचा किया। 1922 ई. में राजस्थान सेवा संघ ने ''नवीन राजस्थान'' नामक अखबार निकाला, जिसने कृषक आन्दोलनो के पक्ष में आवाज उठाई। 1923 ई. में इसे ''तरूण राजस्थान'' के नाम से प्रकाशित किया जाने लगा। 1932 ई. में प्रभात, 1936 ई. में नवज्योति, 1939 ई. में नवजीवन, 1935 ई. में जयपुर समाचार, 1943 ई. मे लोकवाणी इत्यादि समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान की समस्याओं व आंदोलन का खुलासा किया व इनके लिये राष्ट्रीय सहमति बनाई।

इसी प्रकार ठाकुर केसरी सिह बारहठ, जयनारायण व्यास, पं. हीरालाल शास्त्री की कविताओं मे देश प्रेम अपनी चरम सीमा पर परिलक्षित होता है। अर्जुनलाल सेठी की कृतियों ने वैचारिक क्रांति उत्पन्न की। इस संदर्भ मे महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण द्वारा उचित ''वीर सतसई'' का उद्धरण विस्मृत नहीं किया जा सकता है जिसमें वीर रस व स्वदेश प्रेम का अनूठा सम्मिश्रण है।

- **मध्यम वर्ग की भूमिका**- यद्यपि राजस्थान का साधारण मनुष्य भी विद्रोह की सामर्थ्य रखता था, फिर भी एक योग्य नेतृत्व उसे मध्यम वर्ग से ही मिला, जो आधुनिक शिक्षा प्राप्त था। यह नेतृत्व शिक्षक, वकील व पत्रकार वर्ग से आया। जयनारायण व्यास, मास्टर भोलानाथ, मघाराम वैद्य, अर्जुनलाल सेठी, विजय सिंह पथिक आदि इसी माध्यम वर्ग के प्रतिनिधि थे।
- **प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव**- राजस्थान के लगभग सभी राज्यों की सेनाओं ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया। जो सैनिक लौटकर आये उन्होने अपने अनुभव बाँटे-नई वैचारिक क्राांति से राजस्थान के लोगो को परिचित कराया। दूसरी और युद्ध का समस्त भार भारतीय जनता द्वारा अंग्रेज सत्ता को कर चुका कर उठाना पड़ा और परिणामस्वरूप असंतोष का भाव अधिक पनपने लगा।
- **बाह्य वातावरण का प्रभाव**- राजस्थान शेष भारत में चल रही राजनीतिक गतिविधियों से अनभिज्ञ नही था। राष्ट्रीय स्तर के नेताओं व उनके कार्यक्रमों का प्रभाव यहाँ भी पड़ा। जहाँ एक ओर हरि भाऊ उपाध्याय व जमनालाल बजाज जैसे लोग गाँधीवादी नीतियों का अनुसरण कर रहे थे वहीं रास बिहारी बोस के विचारों से प्रेरित अर्जुन लाल सेठी, गोपालसिंह खरवा व बाहरठ परिवार भी स्वतंत्रता की अलख जगा रहे थे।

राजस्थान में किसान आंदोलन

राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक संरचना सामंती रही है। यह सरंचना त्रिस्तरीय थी जिसमें क्रमशः शासक, जमींदार व कृषक वर्ग सम्मिलित थे। इन सभी के परस्पर अंतर्संबंधी पर यह व्यवस्था टिकी थी। 19वीं शती के अंत मे संबध सौहार्दपूर्ण रहे। जहाँ एक और शासक अपनी शक्ति के लिये सामंतों पर निर्भर रहते थे, वहीं सामंतों ने कृषकों को उनके परंपरागत अधिकारों से वंचित न करके अपना सुदृढ़ आधार तैयार कर रखा था। भूमि दो प्रकार की थी- खालसा व जागीरी और दोनों क्षेत्रों के किसानों की दशा में अंतर भी स्पष्ट दिखलाई पड़ता था।

19वीं शती के अन्त मे राजस्थान का परिदृश्य बदलना आरम्भ हो गया। इसका कुल कारण देश भर की बदली राजनीतिक परिस्थितियाँ, अंग्रेजो का आतंक, रियासतों की अव्यवस्था, जागीरदारों का शोषण व देश भर मे चल रहे राजनीतिक आंदोलनों का प्रभाव था।

कृषक असंतोष के कारण

जहाँ एक ओर राजस्थान के कृषको की राजनीतिक चेतना भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित मानी जा सकती है, वहीं दूसरी ओर निश्चित रूप से कुछ ऐसी सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों थी जो राजस्थान के किसानों के लिये विशिष्ट थी।

- अंग्रेजों के प्रभाव मे आकर शासकों ने अपनी प्रजा की ओर पर्याप्त ध्यान देना छोड़ दिया। शासकों व जागीरदारों ने स्वयं का अस्तित्व ही ब्रिटिश सत्ता पर आधारित समझ लिया। इसलिये, शासकों की निर्भरता जागीरदारों पर व जागीरदारों की निर्भारता कृषकों पर समाप्त होती चली गई।
- राजस्व अधिक वसूलने के साथ-साथ ही कृषकों से ली जाने वाली बेगारों व लागों मे भी अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई। कुछ राज्यों मे तो लोगों की संख्या लगभग 300 तक थी।
- जागीरदारों व सामंतों की निर्भरता धातु मुद्रा पर बढ़ती गई। यह अंग्रेजों की अत्यन्त विलासी जीवन शैली को अपनाने के कारण हुआ इनके नये खर्चो का बोझ कृषि व्यवस्था पर पड़ा। दूसरा कारण परम्परागत चाकरी को रोकड़ मे परिवर्तित करना था। अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्थाओं को अपनाने के फलस्वरूप सामंतों का कृषको के प्रति उदार व पैतृक नजरिया बदल गया।
- कृषक असंतोष का एक प्रमुख कारण अन्य व्यवसायों से विस्थापित लोगों का कृषि पर निर्भर हो जाना था। यह लक्षण अंग्रेजी औपनिवेशिक नीति का सीधा परिणाम था। कृषक मजदूरों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने से जागीरदारों के रूख मे अधिक कठोरता आ गई।

- कृषि उत्पादित मूल्यों मे गिरावट व इजाफा दोनों स्थितियाँ कृषकों के लिये लाभकारी नही थे। जहाँ एक ओर कीमत मे गिरावट के कारण कृषकों की बचत की मूल्य कम हो जाता था, वहीं कीमते बढ़ने के कारण भी उसे लाभ का भाग नही मिल पाता था क्योकि जागीरदार लगान जिन्स में लेता था।
- जागीरी क्षेत्र मे कृषकों का असंतोष जागीरदारों के जुल्मो के विरूद्ध होता था। किन्तु जागीरदारों के अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रहने के कारण उसे शासको अथवा अंग्रेज अधिकारियों से न्याय की उम्मीद नहीं

बिजौलिया का किसान आंदोलन

- बिजौलिया भीलवाड़ा जिले में स्थित हैं यहाँ किसान आंदोलन 1897 में प्रारम्भ तथा 1941 में समाप्त हुआ। बिजौलिया में मुख्यत: धाकड़ जाति के किसान थे।
- भारत में संगठित कृषक आंदोलन प्रारम्भ करने का श्रेय मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के ठिकाने बिजौलिया को है। बिजौलिया ठिकाने के संस्थापक **अशोक परमार** थे।
- अशोक परमार अपने मूल स्थान जगमेर (भरतपुर) से मेवाड़ के राणा सांगा की सेवा में चित्तौड़ आ गया था। 1527 ई. में खानवा के युद्ध में अशोक की वीरता को देखते हुए राणा सांगा ने उसे ऊपरमाल की जागीर प्रदान की।
- यहाँ के शासक राव कृष्णासिंह के समय बिजौलिया की जनता से 84 प्रकार की लागतें ली जाती थी।
- 1903 ई. राव कृष्णसिंह ने ऊपरमाल की जनता पर कन्या विवाह के अवसर पर 5 रूपये का **'चंवरी कर'** लगाया। इसके विरोध स्वरूप किसानों ने कन्याओं के विवाह स्थगित कर दिए तथा किसानों ने ठिकाने की भूमि पर खेती करना बंद कर दिया। विवश होकर राव कृष्णसिंह ने चंवरी कर समाप्त कर दिया तथा लगान भी 40 प्रतिशत कर दिया।
- बिजौलिया के किसान आंदोलन का नेतृत्व सर्वप्रथम **साधु सीताराम दास** द्वारा किया गया।
- 1906 ई. में राव कृष्णसिंह की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी पृथ्वीसिंह ने 'तलवार बंधाई' की लागत (उत्तराधिकारी शुल्क) लगा दी। किसानों ने साधु सीताराम दास, फतहकरण चारण और ब्रह्मदेव के नेतृत्व में इस कार्यवाही के विरोध में 1913 ई. में ऊपरमाल के क्षेत्र को पड़त रखा और ठिकाने को भूमि कर नहीं दिया।
- बिजौलिया के किसान आंदोलन में 1916 ई. में **श्री विजयसिंह पथिक** ने प्रवेश किया। विजयसिंह पथिक का मूल नाम भूपसिंह था। विजयसिंह पथिक ने **'ऊमाजी के खेड़ा'** नामक स्थान को किसान क्रांति का केन्द्र स्थल बनाया।
- पथिक ने 1917 ई. में श्री सीताराम दास एवं श्री माणिक्यलाल वर्मा के सहयोग से हरियाली अमावस्या के दिन **'ऊपरमाल पंच बोर्ड'** नामक संगठन की स्थापना की तथा मन्ना पटेल को इस पंचायत का प्रमुख बनाया।
- बिजोलिया ठिकाने में भूमि कर निश्चित करने के लिए 'कूता प्रथा' प्रचलित थी।
- 1916 ई. में किसानों ने साधु सीताराम दास की अध्यक्षता में **'किसान पंच बोर्ड'** की स्थापना की।
- भारत सरकार के ए.जी.जी. हॉलैण्ड व किसानों के बीच समझौते के अनुसार 84 में से 32 लागतें माफ कर दी गई, अन्तत: 1922 ई. में आंदोलन समाप्त हो गया, लेकिन ठिकानें ने समझौते का पालन नहीं किया।
- श्री गणेश शंकर विद्यार्थी संपादित एवं कानपुर से प्रकाशित समाचार पत्र 'प्रताप' के माध्यम से तथा इसके साथ ही अभ्युदय, भारत, मित्र, मराठा आदि समाचार पत्रों के माध्यम से विजयसिंह पथिक ने बिजौलिया किसान आंदोलन को समूचे भारत में चर्चा का विषय बना दिया।
- मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर जी. विजयराघवाचार्य के प्रयास से किसानों को पुन: भूमि दे दी गई और 1941 ई. में बिजौलिया आंदोलन का पटाक्षेप हो गया।
- बिजौलिया किसान आंदोलन **सर्वाधिक लंबे समय तक चलने वाला किसान आंदोलन** था।
- गांधीजी ने अपने सचिव **महादेव देसाई** को किसानों की समस्या का अध्ययन करने के लिए बिजौलिया भेजा।
- बिजौलिया किसान आंदोलन का मुख्य ध्येय बिजौलिया के जागीरदार द्वारा किसानों पर लगाये भारी करों, विभिन्न लागतों तथा बेगार प्रथा के विरूद्ध अपना असंतोष व्यक्त कर न्याय प्राप्त करना था।

बेंगू किसान आंदोलन

- बेंगू किसान आंदोलन 1921 से 1925 के बीच चला। बिजौलिया किसान आंदोलन से प्रेरित पड़ोस की जागीर बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर एकत्रित हुए और लाग बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरूद्ध आंदोलन करने का निश्चय किया।
- बेगूं आंदोलन का नेतृत्व राजस्थान सेवा संघ के मंत्री श्री रामनारायण चौधरी ने किया।
- बेगूं आंदोलन को 'बोल्शेविक क्रांति' की संज्ञा भी दी जाती है।
- 1923 ई. में बेगूं ठाकूर अनूपसिंह ने किसानों से समझौता कर उनकी सब मांगे मान ली। परन्तु मेवाड़ सरकार और रेजिडेण्ट ने राजस्थान सेवा संघ और रावत अनूपसिंह के बीच हुए इस समझौते को 'बोल्शेविक फैसले' की संज्ञा दी।
- बेगूं के किसान 13 जुलाई 1923 ई. को गोविन्दपुरा में एकत्र हुए जहाँ सेना ने गोलियाँ चला दी। इस हत्याकांड में 'रूपाजी' और कृपाजी' नामक दो किसानों शहीद हो गए।
- सेना के अत्याचारों से किसानों का मनोबल गिरता देख पथिकजी ने स्वयं बेगूं किसान आंदोलन का नेतृत्व संभाला। 1923 ई. में पथिक जी को गिरफ्तार कर उन्हें 5 वर्ष की सजा दी गई।

अलवर किसान आंदोलन

- 1924 ई. में अलवर राज्य में भूमि बंदोबस्त कर लगान में वृद्धि की गई। अत: अलवर राज्य के खालसा क्षेत्र के राजपूत किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ किया। 14 मई, 1925 ई. को कमाण्डर छाजुसिंह ने किसानों पर मशीनगनें चलाने के आदेश दिए व गांव में आग लगा दी। फलस्वरूप सैकड़ों- स्त्री-पुरूष व बच्चे हताहत हुए। **'तरूण राजस्थान'** एवं **'प्रताप'** नाम समाचार पत्र ने इस घटना का विवरण प्रकाशित किया।
- महात्मा गांधी ने **नीमूचाणा हत्याकाण्ड** को **'जलियांवाला बांग काण्ड'** से भी विभीषण बताया और उसे **'दोहरी डायरशाही'** की संज्ञा दी।
- 1921 ई. में अलवर राज्य में जंगली सुअरों को अनाज खिलाकर होदों में पाला जाता है। ये सुअर किसानों की खड़ी फसलों को नष्ट कर देते थे। इन सुअरों को मारा नहीं जा सकता था, क्योंकि इनकों मारने पर राज्य की पांबदी थी। सुअरों के उत्वात के कारण 1921 ई. में राज्य के किसानों ने आंदोलन

प्रारम्भ कर दिया। अंततः महाराणा ने होदों को हटा दिया तथा कृषकों को सूअर मारने की इजाजत दे दी।

- मेव किसान आंदोलन - अलवर व भरतपुर रियासत के मेवात क्षेत्र के किसानों ने 1932 में डॉ. मोहम्मद अली के नेतृत्व में आंदोलन शुरू कर दिया।

मारवाड़ किसान आंदोलन

- मारवाड़ किसान आंदोलन 1923 से 1947 ई. तक के बीच चला।
- 1923 ई. में श्री जयनारायण व्यास ने **'मारवाड़ हितकारिणी सभा'** का गठन किया। और इसके माध्यम से मारवाड़ के किसानों को लागतों तथा बेगार के विरूद्ध जागृत करने का प्रयास किया।
- जयनारायण व्यास ने अपने ' तरूण राजस्थान' नामक समाचार पत्र के माध्यम से किसानों की दुर्दशा तथा जगीरदारों के जुल्मों का पर्दाफाश किया।
- **'मारवाड़ा की दशा'** तथा **'पोपाबाई का पोल'** नामक पम्पलेटों में भी जागीरी जुल्मों का मार्मिक वर्णन किया गया।
- जोधपुर राज्य में 'तरूण राजस्थान' पर प्रतिबंध लगाते हुए 20 जनवरी 1930 ई. को जयनारायण व्यास, आनंदराज सुराणा तथा भंवरलाल सर्राफ को बंदी बना लिया।

शेखावाटी किसान आंदोलन

- बिलाऊ, डूडलोद, मलसीसर, मंडावा तथा नवलगढ़ जो **'पंचपाणे'** कहलाती थीं शेखावटी की पांच प्रमुख जागीरें थी। शेखावाटी क्षेत्र में कुल 421 जागीरदार थे।
- राज्य सरकार द्वारा भेजे गये कमीशन ने किसानों की कुछ मांगों का समर्थन किया। इस पर ठिकानों को किसानों की कुछ मांगें माननी पड़ी व आंदोलनकारियों से सद्व्यवहार का आश्वासदन देना पड़ा।
- प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं ने अकाल राहत कार्यों में शेखावटी के कृषकों को बड़ी सेवा की किन्तु समाज सेवी प्रजामण्डल सदस्य जमनालाल बजाज को गिरफ्तार कर उनके जयपुर प्रदेश पर रोक लगा दी गई।
- बाद में यह आंदोलन जयपुर में हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में लोकप्रिय सरकार के गठन के पश्चात समाप्त हुआ।
- 1932 में झुंझुनूं के **चौधरी रिसाल** की अध्यक्षता में जाट महासभा का अधिवेशन हुआ।

सीकर किसान आंदोलन

- सीकर आंदोलन का सूत्रपात्र जाट किसानों द्वारा किया गया। सीकर में 56 प्रतिशत भूमि जाट किसानों के पास थी। इस क्षेत्र में भू राजस्व की अनेक विषमताओं के अतिरिक्त अनेकों लाग-बाग, मापा आदि कर थे। इस प्रकार उपज का अधिकांश भाग ठिकानेदार व ठिकानों के अधिकारियों में बंट जाता था।
- 1922 ई. में राव राजा ठा. कल्याण सिंह द्वारा उपज का 50 प्रतिशत लगान लेना प्रारम्भ करते ही किसानों ने इसका विरोध किया।
- इस किसान आंदोलन के नेता रामनारायण चौधरी व हरि ब्रह्मचारी का सीकर तथा जयपुर राजा की सीमा में प्रवेश निषिद्ध कर दिया।
- महिलाओं में जागृति के लिए सरदार हरलाल सिंह की पत्नी **किशोरी देवी** के नेतृत्व में सीकर जिले के **कटराथल गांव** में 1934 में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें 10 हजार महिलाओं ने भाग लिया। सम्मेलन की प्रमुख वक्ता श्रीमती उतमा देवी (ठाकुर देशराज की पत्नी) थी। श्रीमती दुर्गा देवी शर्मा, श्रीमती रमा देवी, श्रीमती फूला देवी' आदि अन्य प्रमुख महिलाएं थी जिन्होंने इस सम्मेलन में भाग लिया।
- **जयसिंहपुरा किसान हत्याकाण्ड** -21 जून, 1934 को डूण्डलोद के ठाकुर के भाई ईश्वर सिंह ने डूण्डलोद में जयसिंहपुरा गांव में खेत जोत रहे किसानों पर हमला कर गोली चलाकर उनकी हत्या कर दी।
- **कूदन गोली कांड** - सीकर के कूदन गांव में किसानों पर 1935 में गोली चलाई गई, जिसमें 4 किसान मारे गये। गोठड़ा व पलथाणा में गोली काण्ड हुआ। 26 मई, 1935 को पूरे देश में सीकर दिवस मनाया गया।
- कूदन गोली काण्ड की चर्चा ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में भी हुई।
- **खूड़ी गोलीकांड** - 1935 ई. में सीकर में खूड़ी गांव में किसानों पर कैप्टन वेब ने लाठी चार्ज करवाया, जिसमें 4 किसान मारे गये। यह विवाद किसान दूल्हें द्वारा घोड़ी पर तोरण मारने के कारण हुआ।
- 1931 ई. में राजस्थान **जाट क्षेत्रीय सभा** की स्थापना हुई।
- 1947 ई. में देश के वातावरण में बदलाव के साथ ही किसानों की समस्त मांगे मानते हुए लाग-बाग व बेगार प्रथा समाप्त कर दी गई।

दूधवा खारा (चूरू) किसान आंदोलन

- 1944 में यहॉ के जागीरदारों ने बकाया राशि के भुगतान का बहाना कर अनेक किसानों को उनकी जीत से बेदखल कर दिया। किसानों का नेतृत्व **चौधरी हनुमानसिंह** ने किया।।
- बीकानेर प्रजा परिषद के अध्यक्ष **पं. मघाराम वैद्य** ने दूधवा खारा के किसानों की समस्या एवं जागीरदारों के अत्याचारों को उजागर किया।
- चूरू जिले के कांगड़ गांव में भी किसानों पर अत्याचार हुए।

डाबड़ा किसान आंदोलन

- लोक परिषद तथा किसान सभा के नेता 13 मार्च, 1947 ई. को आयोजित किसान सम्मेलन में भाग लेने हेतु डाबड़ा (डीडवाना-नागौर) पहुँचे।
- लगभग 600 जाट किसान सम्मेलन में सम्मिलित होने जा रहे थे किन्तु जागीरदार के लगभग 600 सशस्त्र लोगों ने उन्हें घेर लेकिन इसके बाद बंदूकों, तलवारों और भालों का प्रयोग दोनों पक्षों की ओर से किया गया। इसमें चुन्नीलाल शर्मा व जग्गू जाट शहीद हुए। किसानों का नेतृत्व **मथुरादास माथुर** ने किया।
- **हाबड़ा हत्याकाण्ड** का समाचार शीघ्र ही देशभर में फैल गया मुम्बई से प्रकाशित 'वंदे मातरम', जयपुर के 'लोकवाणी' जोधपुर के 'प्रजा सेवक और दिल्ली के हिन्दुस्तार टाइम्स आदि समाचार पत्रों ने इस जघन्य हत्याकांण्ड की घोर निंदा की।

बूंदी किसान आंदोलन

- पं. नयनूराम शर्मा के नेतृत्व में 1922 ई. में बूंदी के किसानों ने बेगार, लाल-बाग और ऊँची लगान दरों के विरूद्ध आंदोलन किया। स्त्रियों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया। राज्य ने दमन का सहारा लिया। यह किसान आंदोलन बरड़ क्षेत्र में हरिभाई किंकर, रामनारायण चौधरी और पं. नयनूराम शर्मा ने चलाया।
- अप्रैल 1923 में डाबी में सम्पन्न हुए किसानों के सम्मेलन पर पुलिस ने गोली चला दी, इस आंदोलन में 'नानकजी भल' घटनास्थल पर ही शहीद हो गये।

टोंक किसान आंदोलन

- टोंक में पिण्डारी शासक अमीर खाँ पिण्डारी के उत्तराधिकारी इब्राहिम खाँ के अदूरदर्शी प्रशासन से 1920-21 ई. में प्रथम जन आंदोलन हुआ, जिसमें किसानों की सक्रिय भूमिका रही।
- **अजगर सभा**- शाहपुरा के राजा हुकुमसिंह के निर्देशन में इस सभा का गठन हुआ। अ-अहीर,ज-जाट, ग-गुर्जर, र-राजपुत इन चारों शब्दों का संबंध उपरोक्त चार जातियों से था तथा कहा गया कि हम सभी क्षत्रीय है। आपस में परस्पर भेद नहीं होना चाहिए।
- राजस्थान को देशी रियासतों में रचनात्मक गतिविधियाँ प्रारम्भ करने का श्रेय प्रजामण्डलों को है। प्रजामंडल की स्थापना का उद्देश्य रियासती कुशासन को समाप्त कर उनमें व्याप्त बुराईयों को दूर करना तथा नागरिकों को उनके मौलिक अधिकार दिलवाना है। संगठनों का तात्कालिक उद्देश्य अपनी-अपनी रियासतों से संबंधित नरेशों की छत्रछाया में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।

राजस्थान में लिये जाने वाले लाग-बाग (कर)

- **कमठाण लाग**- गढ़ के निर्माण व मरम्मत हेतु दो रूपये प्रति घर से वसूले जाते थे।
- **हल लाग**- खेती पर प्रति हल लगने वाली 'हल लाग' कहलाती थी।
- **चूड़ा लाग**- ठकुराइन द्वारा नया चूड़ा पहनने पर मूल्य काश्तकारों से वसूल किया जाता था।
- **खरड़ा लाग**- मोची, छीपा, कुम्हार आदि श्रमजीवी जातियों से वसूली जाती थी।
- **खिचड़ी लाग**- राज्य की सेना जब किसी गांव के पास पड़ा व डालती, तो उनके भोजन के लिए गांव के लोगों से वसूल की जाने वाली लाग खिचड़ी लाग कहलाती थी।
- कांसा लाग-शादी अथवा गमी के अवसर पर ठिकाने को दी जाने वाली रकम के साथ कम से कम पच्चीस पत्तल खाना भेजना कांसा लाग कहलाता था।
- **अंग लाग**- प्रत्येक किसान के परिवार में पांच वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक सदस्य से एक रूपया वार्षिक कर लिया जाता था। यह अंग लाग कहलाता था।
- **ऊडी लाग**- इसके अंतर्गत जागीरदार प्रत्येक काश्तकार से एक मण पर दस सेर अनाज अपनी काश्त के लिए बीज के रूप में लेता था।
- **कुंवरजी के घोड़े की लाग**- कुंवर के बड़े होने पर उसे घुड़सवारी सिखाने तथा उसके लिए घोड़ा खरीदने के लिए प्रति घर एक रूपया कर के रूप में लिया जाता था।
- **कुम्हार लाग**- कुम्हार बेगार के रूप में ठिकाने का पानी भरता था। इसके बदले प्रत्येक काश्तकार को पांच से दस सेर धान कुम्हार को देना पड़ता था।
- **कोटड़ी खर्च की लाग** - ठिकाने को कोटड़ी के खेर्चे के लिए प्रत्येक परिवार से 1 से 6 रूपये तक वार्षिक कर लिया जाता था।
- **खरच**-भोग की भाग- भू-राजस्व वसूली में होने वाले व्यय की पूर्ति के लिए ली जाने वाली लाग को खर्च-भोग की लाग कहा जाता था।
- **गर्ज की लाग** - जब जागीरदार अपने पट्टे के गांव में जाता था तब गांव वाले रूपये इकट्ठे कर जागीरदार को भेंट देते थे।
- **चंवरी लाग**- किसानों के पुत्र या पुत्री के विवाह पर उन पर लगने वाली लाग चंवरी लाग कहलाती है।
- **चीला लाग**- जागीरदार द्वारा अपने ठिकाने की सीमा में से निकलने वाली प्रत्येक गाड़ी से 6 पाई प्रति गाड़ी लाग ली जाती थी।
- **जट लाग**- रायका एवं रैबारियों द्वारा ठिकाने में जाजम बनाने के लिए ऊँट के बाल दिए जाते थे। इसे जट लाग कहते थे।
- **तोल लाग** - यह लाग जागीरदार द्वारा हासिल वसूल कर करने के बाद अधिभार के रूप में 2 से 10 सेर अनाज के रूप में ली जाती थी।
- **दूधा**- लाग ठिकानों के लिए ग्रामीणों से प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति और प्रति परिवार दूध मंगाया जाता था।
- **न्यौता लाग** - यह लाग जागीरदार, पटेल एवे चौधरी द्वारा अपने लड़के-लड़की की शादी के अवसर पर किसानों से वसूल की लाती थी।
- **पंडित की लाग**- यह लाग शिक्षा के नाम पर जागीरदारों से वसूल की जाती थी।
- **पान चराई** - खालसा भूमि में किसानों से पशुओं को पत्ते चरने देने के लिए जाने वाला कर पान चराई कहलाता था।
- **फाड़्या लाग**- जागीरदार द्वारा हासिल का हिस्सा लेने के लिए लाए गए कपड़ों के लिए एक से डेढ़मण धान लाग के रूप में लिया जाता था
- **बकरा लाग**- प्रत्येक काश्तकार से जागीरदार एक बकरा स्वयं के खाने के लिए लेता था और कुछ जागीरदार बकरे के बदले कुछ वार्षिक कर लेते थे।
- **माचा लाग**- काश्तकार को प्रत्येक हर्ष अपने खर्चे से ठिकाने को एक माचा (चारपाई) देनी होती थी।
- **मायरा की लाग**- किसान की पुत्र-पुत्री के विवाह के अवसर पर जब ननिहाल पक्ष के लोब मायरा (भात) लाते थे तो जागीरदार उनसे मायरा लाग के रूप में एक रूपया लेता था।
- **राली लाग** - प्रतिवर्ष काश्तकार एक गददा बनाकर देता था, जो जागीरदार या उसके कर्मचारियों के काम आता था

जनजातीय आंदोलन

राजस्थान में नव राजनीतिक चेतना का श्रीगणेश यहाँ के किसानों व जनजातीय समाज ने किया। यहाँ के कृषको ने अत्यधिक वित्तीय बोझ के विरोध मे अपना स्वर ऊँचा करके तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था को चुनौती दे डाली। ये आंदोलन पूर्णतया अहिंसक थे और परिपक्व राजनीतिक दृष्टि का परिचायक थे। इसी प्रकार राजस्थान के आदिवासी क्षेत्रों मे भी असंतोष स्वत: स्फूर्त था। अपने परंपरागत अधिकारों के उल्लंघन की स्थिति मे ये आंदोलन शुरू हुए, जिन्होने बाद में कुशल नेतृत्व के हाथों में जाने से व्यवस्थित रूप ले लिया। कहना गलत न होगा कि ये स्वत: स्फूर्त आंदोलन थे, जो अन्याय व अनावश्यक उत्पीड़न के विरूद्ध शुरू हुए एवं भावी राजनीतिक आंदोलनों के प्रेरणा सूत्र बने।

राजस्थान मे दक्षिणी क्षेत्र में भील निवास करते है, जो मुख्यत: डूंगरपुर, मेवाड़, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ व कुशलगढ़ के इलाके है। भील अत्यन्त परम्परावादी जाति है जो अपने सामाजिक व आर्थिक स्तर को लेकर सजग रहती है। जब इनके परंपरागत अधिकारों का हनन हुआ तो इन्होने अपना विरोध प्रकट किया, चाहे वह फिर अंग्रेजों के विरूद्ध हो या फिर शासक के विरूद्ध हो। राजस्थान में स्वाधीनता के लिए हुए आंदोलनों में भील, मीणा, व गरासिया आदि जनजातियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसके आंदोलन निम्न प्रकार है-

स्वामी गोविन्द्र गुरू (गिरि)

- स्वामी गोविन्द गिरि का जन्म 1858 ई. में डूँगरपुर राज्य के बांसियों ग्राम में एक बंजारे के घर में हुआ।
- इनके द्वारा चलाया गया आंदोलन **भगत आंदोलन** कहलाता है।
- स्वामी गोविन्द गिरि ने आदिवासयिों की सेवा के लिए 1883 ई. में एक संस्था **'संप सभा'** की सिरोही में स्थापना की।
- संप सभा के माध्यम से उन्होंने मेवाड़ डूँगरपुर, गुजरात, ईडर, विजय नगर और मालवा के **भील-गरासियों** को संगठित किया।
- गोविन्द गिरि ने इस जनजातियों में व्याप्त सामाजिक बुराईयों को दूर करने और कुरीतियों को मिटाने का प्रयत्न किया तथा उनकों अपने मूलभूत अधिकारों का बोध कराया।
- गोविन्द गुरू ने संप सभा का पहला अधिवेशन 1903 ई. में **'मानगढ़ की पहाड़ी' (बांसवाड़ा)** पर बुलाया।
- 1903 के बाद प्रतिवर्ष मानगढ़ पहाड़ी पर संपसभा का अधिवेशन होने लगा।
- **17 नवम्बर 1913** को अश्विन पूर्णिमा के दिन सम्पसभा का अधिवेशन चल रहा था। तब की गई गोली-बारी से 1500 से अधिक भील शहीद हो गये, इसे राजस्थान का **दूसरा जलियांवाला बांग हत्याकाण्ड** कहते है। (प्रथम नीमूचाणा, अलवर)

मोतीलाल तेजावत

- जन्म - कोल्यारी (उदयपुर)
- उपनाम - **आदिवासियों का मसीहा**, बावजी।
- मोतीलाल तेजावत द्वारा चलाये गये आन्दोलन को **एकी** आंदोलन के नाम से जानते है।
- एकी आंदोलन की शुरूआत **मातृकुण्डिया,** (राशमी), चित्तौड़ से की।
- मोतीलाल तेजावत ने 1921 ई. में कोटड़ा झाड़ोल, मादड़ी आदि क्षेत्रों में भीलों को संगठित किया।
- **1922** में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में **नीमड़ा** नामक स्थान पर एक आंदोलन का सम्मेलन चल रहा था। तब अंग्रेजों द्वारा की गई गोली-बारी से 1200 से अधिक आदिवासी भील मारे गये।
- मोतीलाल तेजावत ने जीवन भर आदिवासियों के लिए संघर्ष किया। 5 दिसम्बर, 1963 ई. को **निधन** हो गया।
- मोतीलाल तेजावत ने **21 सूत्री मांगपत्र** तैयार किया जिसे **'मेवाड़ पुकार'** की संज्ञा दी जाती है।
- मोतीलाल तेजावत ने भीलों की समाजिक स्थिति को सुधारने हेतु 1936 में **'वनवासी संघ'** की स्थापना की।

राजस्थान में मीणा आंदोलन

- राजपूतानें के कई राज्यों में मीणा जनजाति निवास करती थी। पूर्व खोह, मांची गेटोर, आमेर, झोटवाड़ा, भांडारेज नरेठ आदि क्षेत्रों में मीणों के जनपद थे तथा वहॉ मीणा शासक राज्य करते थे।
- मीणों का मुख्य क्षेत्र ढूंढ़ाढ था। वहाँ के कछवाहा राजपूतों ने उनका राज्य छीन लिया।
- दुलहराय और उसके साथियों द्वारा खोह-गंग के मीणा शासक आलनसिंह एवं उसके 1500 सहयोगियों को मारने के बाद दुलहराय ने खोह-गंग पर अधिकार कर ढूंढ़ाड़ में 1137 ई. में कछवाहा राज्य की नींव डाली।
- राज्य में कई भागों में शासन करने वाली मीणा जनजाति के लोगों ने बाद में चोरी डकैती एवं लूटमार को अपना व्यवसाय बना लिया था। अत: उन पर नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से 1924 ई. में ही छोटूराम झरवाल, महादेव राम पबड़, जवाहर राम, आदि ने **'मीणा जाति सुधार कमेटी'** नाम की एक संस्था की स्थापना की।
- 1930 ई. में जयपुर राज्य में भी **'जयायम - पेशा कानून'** लागू हुआ। जिसमें हर आयु के बच्चों के लिए निकटस्थ पुलिस थाने में नाम दर्ज करवाना और दैनिक हाजरी देना अनिवार्य कर दिया।
- 1933 ई. में **'मीणा क्षत्रिय महासभा'** की स्थापना हुई। जिसमें 'जयराम-पेशा कानून' रद्द करने की मांग की।
- जैन मुनि मगनसागर की अध्यक्षता में 1944 ई. में सम्पन्न नीम का थाना सम्मेलन में **'जयपुर राज्य मीणा सुधार समिति'** नामक संस्था की स्थापना हुई।
- इस समिति के अध्यक्ष **श्री बंशीधर शर्मा,** मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार 'अजेय तथा संयुक्त मंत्री श्री लक्ष्मीनारायण झरवाल थे।
- उदयपुर में 31 दिसम्बर 1945 को आयोजित भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के अधिवेशन में भी जयराम-पेशा कानून रदद करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। परिषद के **अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू** थे।
- 28 अक्टूबर, 1946 को बागावास में एक विशाल सम्मेलन में चौकीदार मीणों ने स्वेच्छा से चौकीदारी के काम से इस्तीफा दे दिया।
- 1952 ई. में राजस्थान की विभिन्न रियासतों से भी जयराम पेशा कानून रदद कर दिया गया।

राजस्थान में प्रजामण्डल आंदोलन

जिस समय अखिल भारतीय स्तर पर राजनीतिक चेतना फैल रही थी, राजस्थान भी इससे अछूता नहीं रहा। यहाँ विभिन्न संस्थायें जैसे राजस्थान सेवा संघ व राजस्थान मध्य भारत सभा देशी रियासतों मे राजनीतिक चेतना जागृत करने में सफल रही। यही नही ब्रिटिश प्रान्त के कांग्रेसी कार्यकताओं से भी राजस्थान के स्वतंत्रता प्रेमी निरंतर सम्पर्क मे रहे।

राजस्थान मे चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन को तीन भागों मे बांटा जा सकता है। 1927 ई. से पूर्व अखिल भारतीय स्तर पर हो रही राजनीतिक हलचल से राजस्थान प्रभावित था। प्रथम विश्व युद्ध से लौटे सैनिकों का विवरण, रोलेट एक्ट, 1920 का असहयोग आंदोलन जैसी घटनाओं ने निश्चित रूप चेतना जागृत की। यद्यपि सभी रियासतो की स्थितियाँ व समस्यायें समान ही थी, फिर भी एकीकृत संगठन के अभाव मे कोई व्यवस्थित आंदोलन का श्रीगणेश नही हो पाया। कांग्रेस पार्टी ने भी देशी राज्यों के मामलों मे अहस्तक्षेप की नीति घोषित कर यहाँ की राष्ट्रवादी गतिविधियों खादी का प्रयोग प्रचार एवं सामाजिक सुधारों तक ही सीमित कर दी।

1927 ई. मे अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरंभ हुआ। कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी। 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर मे देशी राज्य लोक परिषद का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया।

1938 ई. मे कंग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा संचालित स्वतंत्रता संघर्ष को समर्थन दिया। कांग्रेस के इस प्रस्ताव से देशी रियासतों में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन मिला। इन राज्यों मे चल रहे आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ गये और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। प्रजामंडलों की स्थापना हुई, जिसने देशी शासकों के अधीन उत्तरदायी प्रशासन की मांग की। विभिन्न देशी रियासतों मे प्रजामंडल आंदोलन की भूमिका इस प्रकार रही-

जयपुर प्रजामण्डल

- राजस्थान में प्रजामण्डल की स्थापना सर्वप्रथम 1931 ई. में श्री कपूरचन्द पाटनी द्वारा जयपुर में की गई।
- 1938 ई. में जयपुर प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन जयपुर में सेठ जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।
- जयपुर राज्य में चिरंजीलाल अग्रवाल के नेतृत्व में प्रजामण्डल प्रगति दल नामक संस्था की स्थापना हुई।
- **जेन्टलमेन्स एग्रीमेंट**- जयपुर प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री हीरालाल शास्त्री और रियासत के प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के बीच 1942 ई. में एक समझौता हुआ।

डूँगरपुर प्रजामण्डल

- **भोगीलाल पाण्ड्या** की अध्यक्षता में ही 1944 में डूँगरपुर प्रजामण्डल की स्थापना हुई।
- भोगीलाल पाण्ड्या और गौरी शंकर उपाध्याय ने डूँगरपूर राज्य में शिक्षा प्रसार की दृष्टि से **बागड़ सेवा मंदिर** की स्थापना की।
- शोभालाल गुप्ता ने सागवाड़ा में **हरिजन आश्रय** तथा माणिक्यलाल वर्मा ने सागवाड़ा में **खडलाई आश्रम** की स्थापना की।
- **पूनावाड़ा काण्ड**- सेवा संघ द्वारा संचालित पाठशालाओं को बंद कराने की नीति के तहत मई, 1947 ई. में पूनावाड़ा गांव में संचालित पाठशाला को ध्वस्त कर अध्यापक शिवराम भील को पीटा। यह काण्ड **पूनावाड़ा काण्ड** कहा जाता है।
- **रास्तापाल काण्ड**- रास्तापाल गांव में सेवा संघ द्वारा संचालित पाठशाला डूँगरपूर रियासत द्वारा बंद करने का विरोध करने पर नाना भाई खांट व 13 वर्षीय बालिका कालीबाई, जून, 1947 में अध्यापक सेंगाभाई को बचाने के लिए शहीद हो गए।

मेवाड़ प्रजामण्डल

- मेवाड़ में संगठित राजनीतिक आंदोलन का प्रारम्भ महाराणा भूपालसिंह के समय 1930 ई. में हुआ।
- राजस्थान में विशुद्ध राजनीतिक संगठन के रूप में पहली बार 24 अप्रैल 1938 को **माणिक्यलाल वर्मा** निर्वाचित हुए।
- 31 दिसम्बर 1945 व 1 जनवरी 1946 को पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में उदयपुर में अखिल भारतीय राज्य लोक परिषद का अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

जोधपुर (मारवाड़) प्रजामण्डल

- मारवाड़ (जोधपुर) में जन जागृति का प्रारम्भ 1920 ई. में **तौल आंदोलन** से माना जाता है, इस आंदोलन के प्रमुख सूत्रधार चांदमल सुराणा थे।
- **मारवाड़ सेवा संघ** की स्थापना 1920 ई. में जयनारायण व्यास, भंवरलाल सर्राफ, आनंद लाल सुराणा ने भंवरलाल सर्राफ की अध्यक्षता में की।
- **मारवाड़ हितकारिणी सभा** की स्थापना 1924 ई. में चांदमल सुराणा द्वारा की गई और इसी के साथ मारवाड़ में जनजागृति का प्रारम्भ हुआ।
- 1931 ई. में **जयनारायण व्यास** ने **मारवाड़ यूथ लीग** की स्थापना की।
- 1934 में **मारवाड़ प्रजामण्डल** की स्थापना हुई।
- 1938 ई. में सुभाषचन्द्र बोस की जोधपुर यात्रा के समय **मारवाड़ लोक परिषद** का गठन कर इसका नेतृत्व जयनारायण व्यास को सौंपा गया।
- जयनारायण व्यास ने **'उत्तराधिकारी शासन के लिए संघर्ष'** नामक गुप्त संगठन का गठन किया।

बीकानेर प्रजामण्डल

- अक्टूबर 1936 ई. में **मघाराम वैद्य** द्वारा बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की गई।
- **बीकानेर षडयंत्र केस**- 1931 ई. में जब महाराजा गंगासिंह लंदन गए तो चंदनमल बहड़ व उनके साथियों ने **'बीकानेर एक दिग्गदर्शन'** नाम से पर्चे वितरित कराए, जिसमें बीकानेर की वास्तविक स्थिति का चित्रण था। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर

महाराजा का अपमान हुआ। लौटने पर **बहड़ सत्यनारायण, गोपाल स्वामी** आदि पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। जिसे **बीकानेर षडयंत्र केस** कहते है।

- 1932 ई में बीकानेर राज्य में सार्वजनिक सुरक्षा कानून पास किया गया जिसे **बीकानेर का काला कानून** की भी संज्ञा दी जाती है।
- **बीकानेर षडयंत्र केस** के वकील **रघुवी दयाल गोयल** ने 1942 ई. में **बीकानेर राज्य प्रजा परिषद** की स्थापना की।

कोटा प्रजामण्डल

- कोटा में राष्ट्रीयता के जनक पं. नयनूराम शर्मा माने जाते है।
- पं. नयनूराम शर्मा ने कोटा में 1934 ई. में हाड़ौती प्रजामण्डल की तथा वर्ष 1939 ई. में अभिन्न हरि के सहयोग से कोटा प्रजामण्डल की स्थापना की।

भरतपुर प्रजामण्डल

- भरतपुर में 1912 ई. में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना के समय से जन-जागृति की वास्तविक शुरूआत हुई। समिति के संस्थापकों में प्रमुख महंत जगन्नाथ अधिकारी ने 1920 ई. में दिल्ली में वैभव नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया। इन्हीं दिनों भरतपुर में शुद्धि आंदोलन भी चला। 1937 ई. में **जगन्नाथ कक्कड़** ने कुछ सहयोगियों के साथ **भरतपुर कांग्रेस** मण्डल की स्थापना की।
- **गोपीलाल यादव** की अध्यक्षता में 1938 ई. में **भरतपुर प्रजामण्डल** की स्थापना की गई।

प्रजामण्डलों का जनता के सामाजिक- आर्थिक उत्थान मे योगदान

राजस्थान मे विभिन्न रियासतों मे उत्तरदायी शासन की स्थापना, मौलिक अधिकारों की चेतना जागृति करने, रियासतों में बुराईयों के अंत के लिए प्रजामण्डल संगठनों की स्थापना हुई। इनके योगदान को निम्न बिंदुवार समझा जा सकता है-

सामाजिक उत्थान

- शिक्षा का प्रसार हुआ।
- सामाजिक समरसता बढ़ी।
- राजनैतिक चेतना का विकास हुआ।
- शिक्षा के स्तर मे वृद्धि हुई।
- छुआछूत की भावना कम हुई।
- सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया।
- अधिकारो के प्रति जागरूकता आयी।
- देश के अन्य भागों के प्रति जुड़ाव उत्पन्न हुआ।
- स्वतंत्रता आंदोलन मे सहभागिता बढ़ी।
- रचनात्मक कार्य प्रारंभ हुए यथा बीकानेर मे कन्हैयालाल व स्वामी गोपालदास ने पुत्री पाठशाला खोली।

आर्थिक उत्थान

- किसानों की लाग-बाग एवं बेगार के कमी।
- मेवाड़ में 84 प्रकार की लाग-बागे ली जाती थी यथा तलवार बंधाई, चवरी कर, उन पर रोक लगी।
- किसानों को भूमि मालिकाना हक मिला।
- अकाल राहत कार्य प्रारंभ हुए

स्वतंत्रता आंदोलन संबंधी अन्य तथ्य

- **सिरोही लोक परिषद** की स्थापना **मुम्बई** में 1933 ई. में **बीकानेर लोक परिषद** की स्थापना **कलकत्ता** में 1936 ई. में तथा जैसलमेर प्रजामण्डल की स्थापना जोधपुर में 1945 ई. में की गई।
- 1907 ई. में पं. **कन्हैयालाल ढूंढ** और उनके शिष्य स्वामी गोपालदास ने चुरू में शिक्षा हेतु **पुत्री पाठशाला** और अछूतों की शिक्षा के लिए **कबीर पाठशाला** की स्थापना की।
- **राजपूताना मध्य भारत सभा** की स्थापना 1918 में **दिल्ली** में कांग्रेस अधिवेशन के साथ हुई। विजयसिंह पथिक, चांदकरण शारदा, गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा स्थापित इस सभा के दिल्ली में हुए प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता **पंडित गिरधर शर्मा** ने की। प्रथम सभापति **जमनालाल बजाज** चुने गये।
- दिसम्बर,1919 में राजपूताना मध्य भारत सभा का **दूसरा अधिवेशन** अमृतसर हुआ।
- श्री जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में 1920 ई. में अजमेर में राजपूताना मध्य भारत सभा का **तीसरा अधिवेशन** हुआ।
- 1919 में **वर्धा** में **राजस्थान सेवा संघ** की स्थापना हुई। इसे 1920 ई. में अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ तथा विजयसिंह पथिक अजमेर ले आये।
- अजमेर के निकट हटूंडी में हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा **गांधी आश्रम** की स्थापना की गई।
- 1927 ई. में जयुपर में सेठ जमनालाल बजाज ने **चरखा संघ** की स्थापना की।
- राजस्थान में **छात्र समुदाय द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन का सूत्रपात** सर्वप्रथम अजमेर में हुआ।
- हिन्दी भाषा को राजभाषा बनाने के लिए जयपुर राज्य में 1922 ई. में एक आंदोलन चला।
- हीरालाल शास्त्री द्वारा 1929 में **वनस्थली** (टोंक) में जीवन **कुटीर** नामक संस्था की स्थापना की गई जो वर्तमान में वनस्थली **विश्वविद्यालय** के नाम से जाना जाता है।
- 1931 ई. में अलवर के भवानीसहाय शर्मा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी नामक क्रांतिकारी संगठन के प्रमुख नेता के रूप में सामने आये।
- **छगनराज चौपासनीवाला** ने जोधपुर में 26 जनवरी, 1932 को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में **राष्ट्रीय झण्डा फहराया।**
- श्याम जी कृष्ण वर्मा ने दामोदर व्यास के सहयोग से ब्यावर में **कृष्णा कपड़ा मिल** की स्थापना कीं
- अजमेर में मेयो कॉलेज में प्रवेश पाने वाले प्रथम छोत्र अलवर नरेश मंगल सिंह थे।

राजस्थान का एकीकरण

भारत की स्वतंत्रता अवश्यम्भावी थी। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात भारत का स्वरूप कैसा होगा, इस पर विचार करना था। जैसा कि ज्ञात है कि भारत दो भागों मे बँटा था- ब्रिटिश भारत व देशी रियासते।

यह तो निश्चित था कि ब्रिटिश प्रान्त स्वत: ही भारत का हिस्सा होगे किंतु देशी रियासतों का भविष्य अनिश्चित ही था। रियासतों मे इस बात को लेकर सदैव ही शंका रही थी कि कही संघ मे उनका विलय न कर लिया जाय।

1935 ई. के एक्ट को रियासतों ने पूर्णरूपेण अस्वीकार कर दिया था, क्योकि जो संघीय ढांचा इस एक्ट मे प्रस्तावित किया था, वह उनके स्वतंत्र अस्तित्व के लिये बड़ा खतरा दिख रहा था। देशी राजाओं के इस नजरिये को राष्ट्रवादियों ने बड़ी ही गंभीरता से लिया। उन्हें अंदेशा हो गया था कि भविष्य की लोकतांत्रिक व्यवस्था इन राजाओं के कारण अवरूद्ध हो सकती है। 1938 ई. का कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन इस आंशका का उदाहरण था। 1939 ई. के अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद मे नेहरू की पहल पर राज्यों की जनसंख्या व राजस्व की न्यूनतम सीमाएं निश्चित की गई और भारत के 562 राज्यों को 14 भागों मे बाँट दिया गया। इन राज्यों के राजनीतिक अस्तित्व को दूसरी भीषण चुनौती क्रिप्स मिशन से मिली, जिसने यह संकेत दिया कि राज्यो की सत्ता मिलाकर किसी बड़ी इकाई का निर्माण श्रेयस्कर होगा। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की राजस्थान प्रान्तीय शाखा की 3 नवम्बर, 1946 को हुई बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें यह मांग रखी गई, चूँकि राजस्थान का कोई भी राज्य आधुनिक प्रगतिशील राज्य की सुविधा उपलब्ध कराने की स्थिति मे नही है, इसलिये राजस्थान के सभी राज्य तथा अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त को मिलाकर एक इकाई बना दिया जाना चाहिए। 16 मई, 1946 को कैबिनट मिशन ने अत्यन्त घातक दूरगामी बयान दिया, जिसमें उन सब अधिकरों को वापस राज्यों को लौटोने की बात कही गई, जो उन राज्यों ने अंग्रेज सार्वभौम सत्ता के समक्ष समर्पित कर रखे थे। अब राज्यों ने अपने संघ बनाने की स्वतंत्र इच्छा व्यक्त की। भारत की अंतरिम सरकार के साथ देशी राज्यों को समानता प्रदान कर दी गई। अंग्रेजों की इस नीति ने भारत की स्वतंत्रता मे दरार उत्पन्न कर दी। इससे देशी राज्यों के विभिन्न शासको की स्वतंत्र व निरकुश प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला। चेम्बर ऑफ प्रिन्सेज जैसी संस्थाओं के माध्यम से शासकों की इस भावना को पोषण मिला।

बीकानेर के महाराजा ने शासकों को तत्काल सविधान सभा मे सम्मिलित होने के लिये कहा, जिससे राज्यों के हितों की सुरक्षा संविधान मे हो सके।

जुलाई, 1947 में सरदार पटेल के नेतृत्व मे एक स्टेट्स मंत्रालय 5 जुलाई, 1947 बना जिसका मुख्य कार्य राष्ट्र का एकीकरण करना था। ऐसा कहना गलत न होगा कि भारत के एकीकरण का श्रेय लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल व मंत्रालय के सचिव वी. पी. मेनन को जाता है। सरदार ने राज्यों की देशभक्ति व लोक कल्याणकारी नीति की प्रशंसा करते हुए उन्हे याद दिलाया कि केबिनेट मिशन को स्वीकार करते हुए राज्यों ने तीन विभाग-सुरक्षा, विदेशी मामले व संचार माध्यमों को भारत संघ को सौंपने की बात स्वीकार की थी। भारत सरकार अब भी मात्र इन विभागों का समर्पण चाहती है, इससे अधिक कुछ नही।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम की धारा आठ के अनुसार भारतीय देशी रियासतों पर स्थापित सर्वोच्चता समाप्त कर दी गई व सर्वोच्चता देशी रियासतो को पुन: हस्तांतरित कर दी गई। पृथक अस्तित्व रखने की इच्छुक रियासतो के लिये कम से कम 10 लाख की आबादी व एक करोड़ की वार्षिक आय निश्चित की गई। राजस्थान में मात्र चार राज्य ही इस शर्त को पूरी करते थे। वे थे- जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर।

जहां एक ओर स्टेट्स मंत्रालय इन रियासतों को संघ मे लाने का इच्छुक था, वहीं राजस्थान की रियासतों मे कार्य कर रही संस्थाएं जैसे प्रजामंडल व प्रजा परिषद भी अपने-अपने क्षेत्रों मे संघ के पक्ष मे जनमत तैयार करने मे जुटी थी।

राजस्थान के प्रमुख राज्यों की समस्याएँ

स्वतंत्रता एवं विभाजन के पश्चात फैले सांप्रदायिक झगड़े समस्त का मुख्य कारण थे। अलवर व भतरपुर मे मेव जाति की समस्या पुन: उभर कर आई। साथ ही गाँधीजी की हत्या मे अलवर राज्य का नाम आने से, उसे स्वतंत्र नहीं छोड़ा जा सकता था। यहाँ के शासक ने स्वतंत्रता दिवस भी उल्लासपूर्वक तरीके से नहीं मनाया था।

जोधपुर की भौगोलिक व सामरिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण थी। पाकिस्तान की तरफ से जोधपुर को अपनी तरफ मिलाने की चर्चा जोरों पर थी। भारत सरकार यह जोखिम नहीं उठा सकती थी।

मेवाड़ अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक स्थिति के कारण संघ मे विलय का इच्छुक नहीं था। महाराणा ने सुझाव दिया कि राजस्थान के बाकी राज्य चाहें तो मेवाड़ मे मिल सकते है। मेवाड़ का जागीरदार वर्ग भी इस विलय का प्रबल विरोधी था।

उधर बीकानेर भी सीमांत राज्य होने के कारण भारत के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण प्रदेश था हालांकि संविधान निर्मात्री सभा में बीकानेर का प्रतिनिधित्व था, फिर भी शासक का मानस स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने का ही था।

बदलती हुई राजनीतिक परिस्थिति मे मेवाड़ की नीति में कुछ परिवर्तन आया और वहाँ के महाराणा ने 25 जून, 1946 ई. को उदयपुर मे राजस्थानी राजाओं का एक सम्मेलन आयोजित किया, जिसका मुख्य उद्देश्य एक संघ बनाना था। किन्तु समस्त शासक एक मत नही हो सके इसलिये महाराणा की यह योजना असफल रही। इसी प्रकार डूंगरपुर के शासक ने भी बागड़ राज्य (डूंगरपुर बाँसवाड़ा व प्रतापगढ़) बनाने का असफल प्रयत्न किया। यही प्रयास जयपुर व कोटा के शासक के भी रहे। किन्तु आपसी अविश्वास व पूर्वाग्रहों के कारण ये योजनाएं सफल नहीं हो सकी।

सबसे पहले तो रियासती विभाग ने अलवर राज्य का प्रशासन अपने हाथ मे ले लिया। इसी प्रकार भरतपुर मे भी भारतीय प्रशासक नियुक्त किया गया।

निर्माण कैप्सूल

- स्वतंत्रता के समय भारत में 565 रियासतें थी।
- भारत में देशी रियासतों को एकीकरण करने का कार्य भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल व वी.पी. मेनन को दिया गया था।
- केन्द्र सरकार ने देशी रियासतों के एकीकरण करने हेतु 5 जुलाई 1947 को सरदार **वल्लभ भाई पटेल** (लौहपुरूष) के नेतृत्व में **स्ट्टेस मंत्रालय** (रियासत विभाग) का गठन किया गया था।
- भारत स्वतंत्रता के समय राजस्थान ने 19 रियासतें, 3 ठिकाने तथा अजमेर मेरवाड़ा केन्द्र शासित प्रदेश थे।
- **19 रियासतों में**- अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, कोटा, बूँदी, झालावाड़, डूँगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, टोंक, शाहपुरा, किशनगढ़, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही
- **3 ठिकानों में**- लावा-जयपुर, नीमराणा-अलवर, कुशलगढ़-बांसवाड़ा
- राजस्थान में सर्वप्रथम संघ निर्माण का कार्य 25 जून, 1946 को उदयपुर के **महाराणा भूपाल सिंह** द्वारा किया गया था।
- संघ निर्माण हेतु मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह द्वारा उदयपुर में राजपूताना रियासती राजाओं का सम्मेलन बुलाया तथा **राजस्थान यूनियन निर्माण** का प्रस्ताव सुझाया गया।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान की 19 रियासतों में क्षेत्रफल रियासत- जोधपुर, सबसे छोटी। रियासत-शाहपुर, सबसे प्राचीन रियासत-मेवाड़ तथा सबसे नवीन रियासत-झालावाड़ थी।
- राजस्थान निर्माण के सात चरण चले थे।
- राजस्थान निर्माण प्रक्रिया 18 मार्च 1948 से 1 नवम्बर 1956 तक चली थी।

मत्स्य संघ (18 मार्च 1948)

भौगोलिक, जातीय, आर्थिक दृष्टिकोण से अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली समता व समानता किये थे। चारों शासको को 27 फरवरी, 1946 को दिल्ली बुलाकर उनके समक्ष संघ का प्रस्ताव रखा गया, जिसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। श्री के.एम. मुंशी के सुझाव पर इस संघ का नाम मत्स्य संघ रखा गया, जो महाभारत काल में इस क्षेत्र का नाम था। 28 फरवरी, 1948 को इस आशय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये गये। 18 मार्च, 1948 को इस संघ का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री एन.वी. गाडगिल ने किया। संघ की जनसंख्या 18 लाख व वार्षिक आमदनी 2 करोड़ थी। धौलपुर के शासक उदयभान सिह को राजप्रमुख नियुक्त करके एक मंत्रिमंडल का गठन किया गया। शोभाराम (अलवर) मत्स्य संघ के प्रधान मंत्री बने और इस संघ मे चार राज्यों मे से एक-एक सदस्य लेकर मंत्रिमण्डल बनाया गया। गोपीलाल यादव (भरतपुर) मास्टर भोलानाथ (अलवर) डॉ. मंगल सिंह (धौलपुर) चिरंजीलाल शर्मा (करौली) ने शपथ ली।

निर्माण कैप्सूल

- राजस्थान निर्माण प्रक्रिया का प्रथम चरण मत्स्य संघ था।
- मत्स्य संघ का निर्माण 18 मार्च 1940 को हुआ था।
- मत्स्य संघ में 4 रियासतों अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली तथा एक ठिकाना नीमराणा शामिल था।
- मत्स्य संघ का उद्घाटन 18 मार्च 1948 को केन्द्रिय मंत्री एन. वी गाडगिल द्वारा किया गया था।
- मत्स्य संघ का नाम का सुझाव **के.एम. मुंशी** द्वारा दिया गया था।
- मत्स्य संघ की राजधानी **अलवर** तथा राजप्रमुख धौलपुर **महाराजा उदयभान सिंह** को बनाया गया था।
- मत्स्य संघ का **प्रधानमंत्री** अलवर के **शोभाराम** को बनाया गया था।

पूर्व राजस्थान संघ (25 मार्च 1948)

कोटा, झालावाड़ व डूंगरपुर के शासकों ने एक हाड़ौती संघ बनाने का विचार किया। स्थानीय प्रजामंडलों का दबाव भी निरंतर संघ के पक्ष मे बन रहा था। 3 मार्च, 1948 इन तीनों शासकों ने दिल्ली मे मिलकर संघ का विचार स्वीकार कर लिया। यह राय बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ व डूंगरपुर के राज्यों की भी बनी। शाहपुरा व किशनगढ़ दो ऐसी रियासते थी, जिन्हें तोप सलामी का अधिकार नहीं था। इन दोनों ने पूर्व मे अजमेर-मेरवाड़ा में विलय के प्रयास का विरोध किया था। ये राजस्थान की अन्य रियासतो के संघ मे मिलने के इच्छुक थे, इसलिये संयुक्त राजस्थान मे सम्मिलित होना इन्होने स्वीकार कर लिया। इस प्रकार इस संघ में 9 राज्य थे- बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, कोटा, बूंदी, झालावाड़, किशनगढ़, शाहपुरा और टोंक। इस संघ का क्षेत्रफल 19807 वर्ग मील, आबादी 23.5 लाख एवं आय 1.90 करोड़ थी वर्षिक। वरिष्ठता, क्षेत्रफल व महत्व के आधार पर बून्दी के शासक को यह स्वीकार्य नहीं था क्योकि कुलीय परंपरा मे उसका कोटा से ऊँचा स्थान था। इसलिये उसने उदयपुर के महाराणा से संघ मे मिलने की प्रार्थना की, क्योकि इससे उदयपुर का महाराणा ही राजप्रमुख होता। उदयपुर के महाराणा ने कोई अनुकूल उत्तर नही दिया। अत: इन नौ राज्यों के लिये एक संक्षिप्त संविधान तैयार किया गया और इसका उद्घाटन 25 मार्च 1948 ई. को होना तय हुआ।

इधर मेवाड़ के संयुक्त राजस्थान में सम्मिलित न होने के फैसले का तीव्र विरोध हुआ। मेवाड़ प्रजामंडल व जनता ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। अंतत: मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह को स्पष्ट हो गया कि संघ मे मिले बिना राज्य की प्रगति नही हो पायेगी। उन्होने 23 मार्च, 1948 को विलय के निर्णय की सूचना भारत सरकार को दी। किंतु संयुक्त राजस्थान के उद्घाटन का नियत दिन टाला नही जा सकता था। केन्द्रीय मंत्री एन.वी. गाडगिल ने 25 मार्च, 1948 को संयुक्त राजस्थान का विधिवत उद्घाटन किया। कोटा के शासक राजप्रमुख बने व गोकुल लाल असावा को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।

निर्माण कैप्सूल

- राजस्थान संघ राजस्थान निर्माण का द्वितीय चरण था।
- हाड़ौती क्षेत्र की तीन रियासते कोटा, बूंदी, झालावाड़ को मिलाकर **हाडौती यूनियन** का निर्माण करना चाहते थे।
- बांगड प्रदेश की तीन रियासते डूंगरपुर, बासंवाड़ा, प्रतापगढ़ ये तीनो मिलकर **बांगड प्रदेश यूनियन** बनाना चाहते थे।
- राजस्थान संघ में 9 रियासतों कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, किशनगढ़ शाहपुरा व टोंक सम्मिलित थे।
- राजस्थान संघ का निर्माण 25 मार्च 1948 को किया गया था। इसका उद्घाटन एन.वी. गाडगिल ने किया।
- राजस्थान संघ की राजधानी **कोटा** तथा राजप्रमुख कोटा **महाराज भीम सिंह** को बनाया गया था।
- राजस्थान संघ का उपराजप्रमुख डूँगरपुर महाराज - **लक्ष्मण सिंह** को तथा प्रधानमंत्री शाहपुरा के **गोकुल लाल आसावा** को नियुक्त किया गया था।

संयुक्त राजस्थान संघ (18 अप्रैल 1948)

मेवाड़ की स्वीकृति के पश्चात शर्तो पर विचार विमर्श शुरू हुआ। अंतत: महाराणा को आजीवन राज प्रमुख मान लिया गया। यह पद वंशानुगत रखा गया जो महाराजा की मृत्यु के बाद समाप्त होना तय माना गया। संयुक्त राज्य की राजधानी उदयपुर रखी गई किन्तु विधानसभा का प्रतिवर्ष एक अधिवेशन कोटा मे रखना निश्चित

हुआ। इस संविधान की धारा आठ के अनुसार राजप्रमुख को एक नये विलीनीकरण पत्र पर हस्ताक्षर करने थे व भारतीय संविधान सभा द्वारा संयुक्त राजस्थान से संबंधित निर्णय स्वीकार करने थे। मेवाड़ के महाराणा ने 20 लाख रूपये प्रिवीपर्स के रूप मे मांगे थे। इसके जवाब मे औपचारिक प्रिवीपर्स तो 10 लाख ही रखा गया किंतु वार्षिक अनुदान के रूप में 5 लाख रूपये व धार्मिक अनुष्ठानों के लिए 5 लाख रूपये स्वीकृत किये गये। 11 अप्रैल 1948 ई. को मेवाड़ ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये। इस संघ का उद्घाटन पं. जवाहरलाल नेहरू ने 18 अप्रैल, 1948 ई. को उदयपुर मे किया। मेवाड़ के महाराजा राज प्रमुख, कोटा के शासक वरिष्ठ उपराज प्रमुख व बूंदी व डूंगरपुर के शासक कनिष्ठ उपराज प्रमुख घोषित किये गये। मंत्रीमंडल मे गतिरोध उत्पन्न होने से पं. नेहरू को हस्तक्षेप करना पड़ा। गतिरोध का कारण सामंतों का मंत्रीमंडल मे प्रतिनिधित्व को लेकर था। अंततः माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में गोकुललाल असावा (शाहपुरा), मोहनलाल, सुखाड़िया, प्रेमनारायण माथुर, भूरेलाल बया (सभी उदयपुर), भोगीलाल पांड्या (डूंगरपुर), पं. अभिन्न हरि (कोटा), बृजसुंदर शर्मा (बूंदी) को शपथ दिलाई गई।

निर्माण कैप्सूल

- यह राजस्थान निर्माण प्रक्रिया का तृतीय चरण था।
- राजस्थान संघ में 18 अप्रैल 1948 के दिन मेवाड़ (उदयपुर) के विलय से संयुक्त राजस्थान संघ का निर्माण हुआ था।
- संयुक्त राजस्थान का उद्घाटन पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा किया गया था।
- संयुक्त राजस्थान की राजधानी उदयपुर तथा आजीवन राजप्रमुख उदयपुर महाराणा भूपाल सिंह को बनाया गया था।
- संयुक्त राजस्थान संघ का प्रतिवर्ष अधिवेशन कोटा में आयोजित किया जाना रखा गया था।
- संयुक्त राजस्थान संघ का वरिष्ठ उपराज प्रमुख कोटा महाराव भीम सिंह को बनाया गया तथा कनिष्ठ उपराज प्रमुख डूँगरपुर महाराज लक्ष्मण सिंह व बूंदी महाराज बहादुर सिंह को बनाया गया।
- संयुक्त राजस्थान संघ की प्रधानमंत्री **माणिक्यलाल वर्मा** को बनाया गया।

वृहत राजस्थान (30 मार्च 1949)

मेवाड़ के विजय के साथ ही शेष बचे राज्यों का विलय आसान व निश्चित हो गया। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर मे विलय एवं एकीकरण का जनमत और भी तेज हो गया। जैसलमेर को छोड़कर शेष राज्य जीव्य राज्य थे। समाजवादी दल के नेता जयप्रकाश नारायण ने 9 नवम्बर, 1948 को एक सार्वजनिक सभा में अविलंब वृहद राजस्थान के निर्माण की मांग की। अखिल भारतीय स्तर पर 'राजस्थान आंदोलन समिति' का निर्माण किया गया जिसके अध्यक्ष राम मनोहर लोहिया ने भी एकीकृत राजस्थान की मांग की। श्री वी.पी. मेनन ने शासकों से अलग-अलग मिलकर यह जता दिया कि सत्ता अधिक दिनो तक उनके कब्जें मे रहने वाली नहीं है और विलय अनिवार्य है। सरदार पटेल ने 14 जनवरी, 1948 को शेष राज्यों के विलय की घोषणा कर दी। मेवाड़ के महाराणा को आजीवन महाराज प्रमुख घोषित किया गया। जयपुर के शासक को राजप्रमुख जोधपुर व कोटा के शासकों को वरिष्ठ उपराजप्रमुख व बूंदी व डूँगरपुर शासकों को कनिष्ठ उपराजप्रमुख बनाया गया। राजप्रमुख व उसके मंत्रीमंडल को केन्द्रीय सरकार के सामान्य नियंत्रण मे रखा गया। राजप्रमुख को नये संविलयन पत्र पर हस्ताक्षर करके संविधान सभा द्वारा संघीय व समवर्ती सूचियों को स्वीकार करना था। सरदार पटेल ने नई संगठित इकाई का उद्घाटन 30 मार्च 1948 को किया, जिसे वर्तमान मे राजस्थान दिवस के रूप मे मनाया जाता है। श्री हीरालाल शास्त्री ने 4 अप्रैल 1949 को मंत्रिमंडल को कमान संभाली जिसमें सर्व श्री सिद्धराज ढड्ढा (जयपुर) प्रेमनारायण माथुर (उदयपुर), भूरेलाल बया (उदयपुर), फूलचंद बापना (जोधपुर), नरसिंह कछवाहा (जोधपुर), रावराजा हनुवंत सिंह (जोधपुर), रघुबरदयाल गोयल (बीकानेर) व वेदपाल त्यागी (कोटा) सम्मिलित थे। जयपुर के शासक को 18 लाख रूपये, जोधपुर शासक को 17.5 लाख रूपये, बीकानेर शासका को 17 लाख रूपये, जैसलमेर शासक को 2.8 लाख रूपये प्रिवीपर्स के रूप मे स्वीकृत किये गये। जयपुर को राजधानी घोषित कर, उच्च न्यायालय जोधपुर, शिक्षा विभाग बीकानेर, खनिज विभाग उदयपुर व कृषि विभाग भरतपुर मे स्थापित किये गये।

निर्माण कैप्सूल

- वृहत राजस्थान संघ निर्माण की राय 9 नवम्बर, 1948 को जयप्रकाश नारायण द्वारा दी गई है।
- वृहत राजस्थान संघ निर्माण के लिए **राजस्थान आंदोलन समिति** बनाई गई जिससे अध्यक्ष **राम मनोहर लोहिया** थे।
- वृहत राजस्थान संघ में 4 रियासतें जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर बीकानेर शामिल थी।
- वृहत राजस्थान का उद्घाटन **30 मार्च 1949** को सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा किया गया था।
- वर्तमान में 30 मार्च को **राजस्थान दिवस** मनाया जाता है।
- वृहत राजस्थान संघ की राजधानी **जयपुर** व राजप्रमुख जयपुर **महाराजा सवाई मानसिंह** को बनाया गया था।
- वृहत राजस्थान संघ का मुख्यमंत्री **हीरालाल शास्त्री** थे।

संयुक्त वृहत राजस्थान संघ (15 मई 1949)

इस सारी प्रक्रिया के बीच मत्स्य संघ स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहा था किंतु सरकार कई समस्याओं से घिरी थी। मेव का उपद्रव सरकार के लिये विशेष चिंता की बात थी, भतरपुर किसान सभा व नागरिक सभा द्वारा सरकार विरोधी आंदोलन चरम सीमा पर था। भरतपुर किसान सभा ने बृजप्रदेश नाम से भरतपुर-धौलपुर के अलग अस्तित्व की मांग रखी। अब यह आशंका व्याप्त होने लगी कि कहीं मत्स्य संघ की ही विघटन न हो जाये। इस आशंका को मद्देनजर रखते हुए चारों रियासतों के शासको को दिल्ली बुलाया गया। विचारणीय मुद्दा यह था कि ये राज्य निकटवर्ती राज्य उत्तरप्रदेश मे विलय होंगे अथवा राजस्थान में। जहाँ अलवर व करौली राजस्थान मे विलय के पक्ष में थे वही भरतपुर और धौलपुर उत्तरप्रदेश मे विलय के इच्छूक थे। समस्या के समाधान के लिये श्री शंकररावदेव की अध्यक्षता मे समिति बनाई गई। इस समिति की सिफारिश के अनुसार भरतपुर व धौलपुर का जनमत राजस्थान मे विलय के पक्ष मे था। 15 मई, 1949 को मत्स्य संघ राजस्थान मे सम्मिलित हो गया व शोभाराम शास्त्री को मंत्रिमंडल मे शामिल कर लिया गया। इस सारी प्रक्रिया के बाद सिरोही व अजमेर मेरवाड़ा का प्रश्न रह गया।

निर्माण कैप्सूल

- इसके अंतर्गत वृहत राजस्थान में मत्स्य संघ का विलय कर दिया गया । इसके लिए केन्द्र सरकार की **डॉ. शंकरदेव समिति** की सिफारिश को आधार बनाया गया मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री शोभाराम कुमावत को हीरालाल शास्त्री मंत्रिमंडल में शामिल कर दिया गया।
- मत्स्य संघ, संयुक्त राजस्थान व वृहत राजस्थान संघ का 13 मई, 1949 को विलय कर वृहत राजस्थान संघ का निर्माण किया गया था।

राजस्थान संघ (26 जनवरी 1950 ई.)

सरदार पटेल सिरोही को महागुजरात मे सम्मिलित करना चाहते थे। सिरोही का प्रशासन मुंबई सरकार को सौंप दिया। गुजरात सांस्कृतिक आधार पर सिरोही पर अपना अधिकार जता रहा था। पटेल ने कूटनीति अपनाते हुए 1950 मे सिरोही के दो टुकडे कर दिये जिसमें 304 वर्ग मील क्षेत्र के 89 गांव गुजरात मे दे दिये व शेष सिरोही राजस्थान मे मिला दिया गया। इस प्रकार सिरोही के दो प्रमुख आकर्षण देलवाड़ा व आबू रोड़ गुजरात मे चले गये। इस कदम का राजस्थान मे तीव्र विरोध हुआ, जिसका नेतृत्व मुख्यत: गोकुलभाई भट्ट ने किया। पं. जवाहरलाल नेहरू ने इस समस्या के समाधान हेतु जननेताओ ने दबाव बनाया। अंतत: इसके निपटारे के लिये इस प्रकरण को राज्य पुनर्गठन आयोग को सौंप दिया।

निर्माण कैप्सूल

- इस चरण के अंतर्गत संयुक्त वृहत्त राजस्थान में आबू रोड़ व देलवाड़ा तहसील के अलावा शेष सिरोही राज्य का विलय किया गया।
- अब राज्य का नाम राजस्थान संघ रखा गया। आबू रोड़ एवं देलवाड़ा तहसील बम्बई प्रान्त में मिलाई गई।
- राजस्थान के नेताओं ने सिरोही के विभाजन को स्वीकार नहीं किया अंतत:1 नवम्बर, 1956 ई. को आबू रोड़ एवं देलवाड़ा को भी राजस्थान में मिला दिया गया।

राजस्थान (1 नवम्बर, 1956 ई.)

ब्रिटिश काल मे अजमेर-मेरवाड़ा एक केन्द्र शासित प्रदेश रहा। पूर्ण राजस्थान एकीकरण के बाद इस क्षेत्र स्वतंत्र छोड़ना न सिर्फ अव्यवहारिक होता बल्कि राजनीतिक अदूरदर्शिता का भी नमूना होता। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की राजपूताना इकाई ने अजमेर मेरवाड़ा को भी राजस्थान में विलीन करने की मांग पुरजोर तरीके से उठाई। हरिभाऊ उपाध्याय, जो उस क्षेत्र के प्रसिद्ध नेता थे, व अजमेर के कांग्रेस जनों की यह मान्यता थी कि प्रशासन की दृष्टि से छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व उचित है। इस प्रकरण को भी राज्य पुनर्गठन आयोग को सौंप दिया गया। राज्य पुनर्गठन आयोग ने दोनों ही क्षेत्रों, सिरोही व अजमेर मेरवाड़ा को राजस्थान मे विलय के लिये उपयुक्त समझा। परिणामस्वरूप 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान का एकीकरण पूर्ण हुआ। राजप्रमुख पद समाप्त कर दिया गया व राज्य के प्रथम राज्यपाल के रूप में सरदार गुरूमुख निहाल सिंह को शपथ दिलाई गई। संक्षिप्त रूप में राजतंत्र व सामंतवाद से प्रजातंत्र तक की प्रक्रिया मे प्रजामंडलों, लोकनेताओं व जनसाधारण की इच्छा शक्ति की भूमिका महती रही।

निर्माण कैप्सूल

- राज्य के एकीकरण के इस सातवें व अंतिम चरण में केन्द्र सरकार द्वारा गठित राज्य पुनर्गठन आयोग (जिसके अध्यक्ष **डॉ फजल अली** थे) की सिफारिशों के आधार पर अजमेर -मेरवाडा क्षेत्र आबू एवं देलवाड़ा तहसील तथा मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले की **भानपुरा तहसील** का एक गांव **सुनेल टप्पा** राजस्थान में मिलाया गया जबकि झालावाड़ का **सिरोंज उपखण्ड** मध्य भारत (मध्य प्रदेश) में मिलाया गया।
- राज्य में राज्यपाल का पद सृजित किया गया। सरदार **गुरूमुख** निहाल सिंह राजस्थान के **पहले राज्यपाल** बनाए। राजप्रमुख पद समाप्त कर देने से राजतंत्र के अंतिम अवशेष भी राजस्थान में समाप्त हो गए। **मोहनलाल सुखाड़िया** इस समय राज्य के **मुख्यमंत्री** पद पर आसीन थे।

एकीकरण के विभिन्न चरण

चरण	नाम	राज्य	राजप्रमुख	प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री	तिथि/वर्ष
प्रथम	मत्स्य संघ	अलवर, भरतपुर धौलपुर, करौली	धौलपुर शासक उदयभान सिंह	श्री शोभाराम	18 मार्च, 1948
द्वितीय	संयुक्त राजस्थान संघ	कोटा, बूंदी, झालावाड़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, किशनगढ, टोंक, कुशलगढ़ (ठिकाना)	कोटा नरेश	श्री गोकुल लाल असावा	25 मार्च, 1948
तृतीय	संयुक्त राजस्थान (मेवाड़ विलय)	द्वितीय चरण के राज्यों के साथ मेवाड़	उदयपुर महाराणा भूपाल सिंह	श्री माणिक्यलाल वर्मा	18 अप्रैल, 1948
चतुर्थ	वृहत राजस्थान	तृतीय चरण के राज्यों के साथ जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर व लावा (ठिकाना)	उदयपुर महाराणा भूपाल सिंह महाराजप्रमुख जयपुर नरेश राजप्रमुख	श्री हीरालाल शास्त्री	30 मार्च, 1949
पंचम	वृहत राजस्थान	प्रथम व चतुर्थ चरण के राज्य (नीमराणा-ठिकाना सहित)	''	''	15 मई, 1949
षष्ठम्	वृहत् राजस्थान	पंचम चरण के साथ सिरोही (आबू व देलवाड़ा को छोड़कर)	राज्यपाल गुरूमुख निहाल सिंह		26 जनवरी, 1950
सप्तम	राजस्थान	षष्ठम चरण के साथ अजमेर आबू देलवाड़ा व सुनेल टप्पा			1 नवंबर, 1956

निर्माण कैप्सूल –

- **शंकरराय देव समिति** के परामर्श से अलवर, धौलपुर रियासतों को राजस्थान में मिलाया गया था।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल सिरोही को गुजरात में मिलाना चाहते थे, जिसका विरोध गोकुल भाई भट्ट ने नेतृत्व में हुआ था तथा देलवाड़ा व आबू को सिरोही में शामिल किया गया था।
- सुनेलटप्पा पहले मध्यप्रदेश के भानपुरा का हिस्सा था, जिसे राजस्थान में मिलाया गया तथा राजस्थान के झालावाड़ का सिरोंज भाग मध्यप्रदेश को दिया गया।
- राजस्थान में राज्यपाल पद 26 जनरवरी, 1950 को लागू हुआ था, प्रथम राज्यपाल गुरूमुख निहाल सिंह को बनाया गया था।

राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी

अर्जुनलाल सेठी

- जन्म- 9 सितम्बर, 1880 (जयपुर) जैन परिवार में।
- 1906 ई. जयपुर में शिक्षा प्रचारक समिति की स्थापना की।
- 1907 ई. में अजमेर में जैन वर्धमान पाठशाला की स्थापना की जिसे 1908 में जयपुर स्थानान्तरित कर दी। (भारत की प्रथम राष्ट्रीय विद्यापीठ)
- कार्यक्षेत्र-जिला अजमेर
- पुस्तके-शुद मुक्ति, स्त्री मुक्ति, मदन पराजय, पार्श्वयज्ञ।
- 'महेन्द्र कुमार'-नाटक
- जयपुर महाराजा ने प्रधानमंत्री की नौकरी का प्रस्ताव दिया तब सेठीजी ने कहा ''अर्जुन नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा।''
- राजस्थान के प्रथम क्रांतिकारी।
- राजपूताने में राष्ट्रीयता के जन्मदाता।
- देहावसान के अवसर पर पंडित सुन्दरलाल ने श्रंद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि '' दधीजी जैसा त्याग और दृढ़ता लेकर जन्में थे और उसी दृढ़ता से उन्होंने मृत्यु को गले लगाया।''

विजयसिंह पथिक

- जन्म-24 मार्च, 1882-गुढ़वाली ग्राम, बुलन्दशहर (उत्तरप्रदेश)
- मूल नाम- भूपसिंह
- राजस्थान में किसान आंदोलन के जनक।
- चित्तौड़ में **विद्या प्रचारणी सभा** की स्थापना (ओछड़ी गांव में हरिभाई किंकर के साथ मिलकर)
- वर्धा से **'राजस्थान केसरी'** नामक समाचार पत्र का संपादन।
- 1920 ई. अजमेर में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की। राजनैतिक चेतना जाग्रत करने का सर्वाधिक श्रेय राजस्थान सेवा संघ को जाता है।
- वीर भारत समाज का गठन (1919 ई.)
- बिजोलिया व बेंगू किसान आंदोलन का नेतृत्व
- "What are Indian State" पुस्तक की रचना की।
- 'राजस्थान संदेश', 'नवसंदेश' - पत्र संपादन किया।
- झण्डा यह हर किले पर चढ़ेगा - इनका गीत।

प्रतापसिंह बारहठ

- जन्म-24 मई, 1893 (कविराज श्यामलदास की हवेली उदयपुर में।)
- पिता- केसरी सिंह बारहठ
- माता- माणिक देवी
- 1914-15 बनारस षड्यन्त्र का आरोप तय किये जाने के कारण वरेली जेल में भेज दिये गये। (आसानाडा स्टेशन, जोधपुर में गिरफ्तार)
- सर चार्ल्स क्लीव लैण्ड के आधनुषिक अत्याचारों से जेल में 27 मई, 1918 को मृत्यु।
- प्रताप ने कहाँ ''मैं अपनी माता को हंसाने के लिए हजारों-हजारों की माताओं को नहीं रूला सकता''।

राव गोपाल सिंह खरवा

- जन्म - 19 अक्टूबर, 1873 मेवाड़ रियासत के खरवा ठिकाने में (अजमेर)
- राजस्थान में सशस्त्र क्रांति के जनक।
- केसरी सिंह बारहठ के साथ मिलकर **वीर भारत सभा** (1903 ई.) की स्थापना की।
- 1915 ई. देश व्यापी क्रांति की योजना बनाई।
- मार्च 1939 को निधन - निधन के बाद केसरीसिंह ने कहा ''रहयों लाल पांचाल में, महाराष्ट्र में बाल। रांजत राजस्थान में गौरवमय गोपाल।''

दामोदर दास राठी

- जन्म -पोकरण (जैसलमेर) 8 फरवरी, 1884 ई.।
- ब्यावर में आर्य समाज व होम रूल लीग (1916) की स्थापना की।
- ब्यावर में सनातन धर्म, स्कूल, कॉलेज तथा नवभारत विद्यालय
- की स्थापना की।
- राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम के भामाशाह (28 जून भामाशाह जयंती)
- कार्यक्षेत्र-अजमेर जिला।
- 1889 राज्य में सबसे पहले सूत्री वस्त्र मिल की स्थापना की (इनके पिता खींवराज राठी ने)
- बाल गंगाधर तिलक की उग्र नीतियों के समर्थक ।
- 21 फरवरी 1915 ई. की क्रांति हेतु सहायता।
- 2 जनवरी 1918 ई. को निधन।

जोरावर सिंह बारहठ

- केसरी सिंह बारहठ के छोटे भाई
- 23 दिसम्बर 1912 ई. को दिल्ली के चांदनी चौक में लार्ड हाडिग पर बम फेंकने वाला साहसी व्यक्ति।

श्यामजी कृष्ण वर्मा

- 1887-1897 तक रतलाम, उदयपुर व जूनागढ़ राज्यों में दिवान पद पर रहें।
- स्वदेशी के प्रबल समर्थक।
- इंग्लैण्ड में इण्डियन हाऊस व होमरूल सोसायटी की स्थापना।

माणिक्य लाल वर्मा

- जन्म - 4 दिसम्बर, 1897 बिजौलिया (भीलवाड़ा)
- संयुक्त राजस्थान के प्रधानमंत्री।
- मेवाड़ प्रजामण्डल के संस्थापक।
- पदम् विभूषण से सम्मानित (1965 दूसरे व्यक्ति)।
- 1934 सागवाड़ा में खाडलाई आश्रम की स्थापना (उद्देश्य- भीलों को समाज की मुख्य धारा में लाना।)
- मेवाड़ का वर्तमान शासन- पुस्तक
- 'पंछीड़ा'- प्रजामण्डल युगीन गीत।

भोगीलाल पाण्ड्या
- बागड़ के गांधी
- जन्म- सीमलवाड़ा ग्राम, डुंगरपुर (1904)
- आदिवासियों में निरक्षरता उन्मूलन हेतु शिक्षा का प्रचार-प्रसार।
- वागड़ सेवा मंदिर नाम से संस्था की स्थापना, इसके बन्द हो जाने पर **वनवासी सेवा संघ** की स्थापना (15 मार्च, 1938)
- स्व: मणि बहन पांड्या इनकी पत्नी इन्हें 'वागड़वा' की उपाधि।
- 1976 ई. पद्म भूषण

सागरमल गोपा
- जन्म -जैसलमेर
- सर्वहितकारी वाचनालय की स्थापना की (1915)
- जैसलमेर के महारावल जवाहरसिंह के अत्याचारों का विरोध।
- आजादी के दीवाने, रघुनाथसिंह का मुकदमा, जैसलमेर में गुण्डाराज' नामक पुस्तकें लिखी।
- जैसलमेर व हैदराबाद राज्य में घुसने पर प्रतिबन्ध।
- जेल, अधीक्षक गुमानसिंह ने 3 अप्रैल 1946 को जेल में गोपा की हत्या, जॉच हेतु गोपाल स्वरूप पाठक समिति का गठन।

जमनालाल बजाज
- जन्म-4 नवम्बर, 1889, काशीनास ग्राम (सीकर)
- गाँधी के पांचवे पुत्र के नाम से प्रसिद्ध।
- अंग्रेजों ने 'राय बहादुर' का खिताब दिया (1917)।
- 1920 बागपुर कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष
- 1937 मद्रास हिन्दी साहित्य समिति के अध्यक्ष।
- अपने को गुलाम नम्बर चार मानते थे। भारत गुलाम, देशी राजा गुलाम, सीकर गुलाम, मैं गुलाम।
- 1921 रायबहादुर की उपाधि लौटा दी।
- राजस्थान में सर्वप्रथम उत्तरदायी शासन की मांग करने वाले।
- चरखा व खादी के समर्थक (1927 चरखा चंख की स्थापना की।)11 फरवरी 1942 को मृत्यु।
- राजपूताना मध्य भारत सभा की अजमेर में अध्यक्षता की।

रामनारायण चौधरी
- जन्म- 1896, नीम का थाना (सीकर)
- 1932 ई. में हरिजन सेवक संघ की राजपूताना शाखा का कार्यभार संभाला।
- कार्यक्षेत्र-अजमेर जिला।
- 'तरूण राजस्थान' का संपादन किया।
- गांधी जी की दक्षिण यात्रा के समय हिन्दी सचिव रहे।

नेतराम गौरीर
- जन्म - 1892, गौरीर गांव (झुंझुनू)
- शेखावटी में आर्य समाज को संगठित किया।
- स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन (कन्या शिक्षा)

गोकुल भाई भट्ट
- जन्म - 1898 ई. हाथल गांव (सिरोही)
- प्रारम्भिक शिक्षा मुम्बई में।
- भूदान आंदोलन के सक्रिय योगदान।
- **राजस्थान में गाँधी** नाम से प्रसिद्ध।
- 1946 राजपुताना प्रान्तीय देशी राज्य परिषद् के प्रथम अध्यक्ष।
- नशामुक्ति के प्रणेता।
- सिरोही का राजस्थान में विलय इनके प्रयासों से।
- 1966 पद्मभूषण, संविधान सभा के सदस्य रहे।

हरिभाऊ उपाध्याय
- जन्म-9 मार्च 1893
- भैरांसा ग्राम (ग्वालियर)
- 'दा' साहब नाम से प्रसिद्ध।
- वास्तविक नाम बद्रीनाथ।
- हटुण्डी (अजमेर) में 'गाँधी आश्रम' की स्थापना की।
- औदूंम्बर, नवजीवन व सरस्वती नामक पत्रिका का प्रकाशन।
- 1925 ई. 'सस्ता साहित्य मण्डल' की स्थापना की।
- 1952 ई. अजमेर राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री बने।
- 'युगधर्म' व 'सर्वोदय की बुनियाद' इनकी पुस्तके।

जयनारायण व्यास
- जन्म- 1899 ई. (18 फरवरी) जोधपुर
- शेर-ऐ-राजस्थान, लोकनायक नाम से लोकप्रिय।
- सर्वप्रथम सामन्त शाही के खिलाफ आवाज उठाने वाले।
- 'आगी बाण' ब्यावर से प्रकाशित राजस्थानी भाषा का प्रथम राजनैतिक सामाचार पत्र।
- 'अखण्ड भारत' को बम्बई से प्रकाशित किया।
- 'पीप' नामक अंग्रेजी मासिक पत्र की सम्पादक रहे।
- मारवाड़ हितकारिणी सभा की स्थापना की (चांदकरण शारदा अध्यक्ष)
- जोधपुर प्रजामण्डल के संस्थापक।
- 3 जुलाई 1947 भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया।
- जय नारायण व्यास राजस्थान के एक बार मनोनीत तथा एक बार निर्वाचित मुख्यमंत्री रहे।
- कविता - 'मैंने अपने ही हाथों से अपनी चिता जलाई। देख-देख लपटे मैं हंसता, तु क्यों रोता भाई।'
- 1917-18 जोधपुर में पुष्करणा नवयुवक मण्डल की स्थापना।
- 26 अप्रैल 1951 - राज्य के मुख्यमंत्री मनोनीत
- 1 नवम्बर 1952 निर्वाचित मुख्यमंत्री (6 नवम्बर 1954 तक)
- अक्कड़ के कक्कड़, लकीर के फकीर नाम से लोकप्रिय।
- राजस्थानी को प्रान्तीय, भाषा का दर्जा दिलाने के लिए ''राजस्थानी आंदोलन क्या, और क्यों नहीं'' पुस्तक का प्रकाशन किया।
- डंके री चोट सूण - प्रजामण्डल युगीन गीत।

हीरालाल शास्त्री
- जन्म- 24 नवम्बर, 1899 जयुपर में।
- निवाई (टोंक) शान्ताबाई शिक्षा कुटीर की स्थापना, बाद में नाम बदलकर वनस्थली विद्यापीठ कर दिया। (महिला शिक्षा से संबंधित 1935 में)
- 4 अप्रैल, 1949 राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री बने।
- 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र'- आत्मकथा
- रतन शास्त्री इनकी पत्नी जो विद्यापीठ की संचालिका।
- प्रलय प्रतिक्षा नमों नम: इनका प्रसिद्ध गीत।
- 1942 ई. शास्त्री जी व जयपुर के प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के मध्य जैन्टलमैन समझौता।
- 'सपनों आयो' प्रजामण्डल से संबंधित गीत।
- जयपुर से संविधान निर्मात्री सभा में भेजे गए।
- रतन शास्त्री को 1995 पद्म श्री 1995 पद्मभूषण

जुगलकिशोर चतुवेदी
- जन्म - 8 नवम्बर, 1904 साँख ग्राम (मथुरा)
- 1947 को भरतपुर में जबरन बेगार के लिए चलाये गए आंदोलन का संचालन किया।
- मत्स्य संघ में उपप्रधानमंत्री।
- 'लोक शिक्षक' पुत्र की संपादन।
- कार्यक्षेत्र-भरतपुर जिला।
- जनता प्यार से इनको दूसरा जवाहरलाल नेहरू कहकर पुकारती।

ज्वाला प्रसाद शर्मा
- अजमेर
- 1931 में रेलवे खजाना लुटने की योजना बनाई।
- हटुण्डी के जंगलों में बाइक चलाने का प्रशिक्षण।
- अप्रैल 1932 में अजमेर चीफ कमिश्नर की हत्या का प्रयास।
- राजकीय महाविद्यालय स्टाफ की वेतन लुटने का प्रयास।
- 1934 ई. वायसराय की बीकानेर में हत्या करने का प्रयास।
- जयपुर के सूरज बक्श को धमकी भरा पत्र भेजा।

दुर्गाप्रसाद चौधरी
- जन्म - 18 दिसम्बर, 1906 रामनारायण चौधरी के छोटे भाई जन्म - नीम का थाना (सीकर)
- अजमेर के साबरमती और हटुण्डी आश्रमों में कार्यरत थे।
- 'कप्तान' नाम से प्रसिद्ध।
- दैनिक नवज्योति का 1936 में संपादन किया।
- बिजौलिया आन्दोलन व डुंगरपुर भील आन्दोलन से जुड़े।

मुकुट बिहारी लाल भार्गव
- जन्म -शाहपुरा (भीलवाड़ा) 30 जनवरी, 1903 को
- कार्यक्षेत्र अजमेर
- संविधान सभा में अजमेर का प्रतिनिधित्व किया
- हरिभाऊ उपाध्याय ने **'राजस्थान का सी.आर.दास'** कहा।

बाल मकुन्द बिस्सा (जोधपुर)
- जन्म- पीलवा, डीडवाना (नागौर)
- पुष्करणा परिवार में
- प्रारम्भिक शिक्षा कलकता में।
- 1934 ई. राजस्थान में चर्खा एजेन्सी लेकर खददर भण्डार की स्थापना की।
- जोधपुर जेल में भूख हड़ताल से मृत्यु (19 जुन,1942 ई शव यात्रा में 1 लाख लोग)
- भुख हड़ताल से शहीद होने वाले राज्य के प्रथम व्यक्ति

साधु सीताराम दास
- जन्म 1884 ई. बिजौलिया में
- किसानों की दुर्दशा देखकर उनको संगठीत किया और जगह-जगह पाठशालाएं व पुस्तकालय स्थापित किये।
- संगठित सामंती सेना से लोहा लेने वाली सेना का पहला लोक नायक।

पं. नरोतम लाल जोशी
- जन्म - 16 दिसम्बर, 1916 झुंझुनू में।
- जयपुर राज्य प्रजामण्डल के 1938 में हुए जन आंदोलन के प्रवर्तक रहे।
- 1939 ई. शेखावटी जकात आंदोलन का नेतृत्व किया।
- 1945 ई. संविधान निर्मात्री समिति के सदस्य रहे।
- प्रथम विधानसभा अध्यक्ष।

हरिदेव जोशी
- जन्म- 17 दिसम्बर 1921 खान्टू ग्राम (बांसवाड़ा)
- कार्यक्षेत्र डूँगरपूर जिला।
- जयपुर से प्रकाशित 'दैनिक नवयुग' और पार्टी के पत्र 'कांग्रेस संदेश' के सम्पादक रहे।
- तीन बार मुख्यमंत्री।
- 10 विधान सभाओं में लगातार विजयी रहे।
- डुंगरपुर प्रजामण्डल के संस्थापक थे।

दामोदर लाल व्यास
- मालपुरा (टोंक) निवासी।
- राजस्थान के लौह पुरूष के नाम से लोकप्रिय।
- राज्य में पहले राजस्व मंत्री।
- राजस्थान में भूमि सुधारों को कठोरता पूर्वक लागू करवाने में प्रमुख भूमिका।

शौकत अस्मानी (बीकानेर)
- जन्म-21 दिसम्बर, 1901 ई.
- अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व वाला राजस्थान का एक सपूत।
- हिजरत आंदोलन का सदस्य था।

मुंशी समर्थदान चरण
- 1889 'राजस्थान समाचार पत्र ' की प्रकाशन प्रारम्भ कर राजस्थान में पत्रिकारिता का श्री गणेश किया।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इनको 'मनीषी' की उपाधि दी।

गोकुल वर्मा
- भरतपुर प्रजामण्डल के नेता।
- शेर-ए भरतपुर नाम से प्रसिद्ध

गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'
- जन्म-21 मार्च, 1907
- भीमराज पुरोहित के साथ मिलकर **'मारवाड़ यूथ लीग'** की स्थापना। (10 मई, 1931)
- ''गरीबों की आवाज, बेकसों की आवाज, इंकबाल-ए-तराने'' पुस्तिकाऐ
- ''आज जन कवि री जुग वाणी'' प्रजामण्डल युगीन गीत।
- पीड़ित एवं शोषित किसानों एवं मजदूरों के हितों के पोषक।

केसरी सिंह बारहठ (1827-1941)
- जन्म - 21 नवम्बर, 1872।
- जन्म स्थान - देवपुरा खेड़ा (भीलवाड़ा)
- पिता- कृष्णसिंह
- उच्च स्तरीय विद्वान, राजनीतिज्ञ, स्वाभिमानी।
- चेतावनी रा चूंगटिया (13 सोरठे)- रचना, डिंगल भाषा में।
- 1903 महाराणा फतहसिंह को कर्जन के दरबार में जाने से रोका।
- दरबार का आयोजन एडवर्ड सप्तम के राज्या रोहण के अवसर पर राजाओं का।
- 1911 ई. दिल्ली दरबार में जाते समय महाराणा को पुनः गोपाल सिंह व केसरीसिंह ने पत्र लिखे।
- 1920 ई. कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में राजपूताना एवं मध्य भारत के प्रतिनिधि के रूप में भाग।
- 14 अगस्त, 1941 कोटा में देहांत।
- ग्रंथ-प्रताप चरित्र, राजसिंह चरित्र, दुर्गादास चरित्र, जसवंत सिंह चरित्र। श्यामदास की जीवनी लिखी।

स्वामी केशवानन्द
- जन्म- 1883 मगलूणा (सीकर), जाट परिवार में।
- बचपन का नाम- बीरमां
- फिरोजपुर (पंजाब) के अनाथ आश्रम में पालन, 1904 ई. उदसरी मत में दीक्षित केशवानन्द बने।
- 1908 गुरू ने फाजिल्का की गुरू गद्दी सौंप दी।
- ग्रामोत्थान विद्यापीठ-संगरिया (H) के संस्थापक।
- 1952-64 राज्यसभा सदस्य।

घनश्यामदास बिड़ला

- जन्म-पिलानी (झुंझुनू)
- प्रसिद्ध उद्योगपति एवं स्वतंत्रता सेनानी, उच्च कोटि के लेखक पुस्तकें-गांधीजी के साथ पन्द्रह दिन, गाँधीजी की छत्र-छाया में, मार्सेल्स से जिनेवा, हम पराधीन क्यों?, बिखरे विचारों की भरोटी, कृष्ण वंदे जगतगुरू, विद्यार्थी जीवन।
- पिलानी में बिड़ला तकनीकि शिक्षण संस्थान की स्थापना।
- 'हरिजन सेवक संघ' के संस्थापक सदस्य।
- 'हरिजन' पत्र का संपादन।
- हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह की स्थापना की।
- पदम् विभूषण विजेता (1961 प्रथम विजेता)
- वैज्ञानिक C.V. Raman को 20 लाख रू. प्रयोगशाला की स्थापना के लिये।
- भारत की आजादी के लिए 20 करोड़ कांग्रेस व अन्य संस्थाओं को।

मुनि जिन विजय

- जन्म रूपाहेली गांव, 1888 ई. (मेवाड़)
- बचपन का नाम - रिणमल परमार, 15 वर्ष की आयु में जैन धर्म में।
- कुमार पाल प्रतिबोधा ग्रन्थ का संपादन।
- जैन साहित्य संशोधक समिति का स्थापना।
- जर्मनी में इण्डो जर्मन 'केन्द्र की स्थापना।
- 1942 जैसलमेर में 200 ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ तैयार करवाई
- 1905 ई. इनके निर्देशन में राजस्थान पुरातत्व मंदिर की स्थापना।

देवीलाल सामर

- जन्म- 1911, उदयपुर।
- पिता- अर्जुनसिंह, माता-अलोल बाई
- 11 वर्ष की आयु में अभिमन्यू नाटक में अभिमन्यु का अभिनव, इसी कारण मदन मोहन मालवीय पुरस्कार
- 1952 भारतीय लोक कला मण्डल की स्थापना।
- पद्मश्री (1968)
- पड़ कावड़ व कठपुतली को पुनर्जीवित करने में

दौलतसिंह कोठारी

- जन्म-उदयपुर, 1906।
- डॉ. मेघनाद साहा के शिष्य।
- 1948 DRDO के अध्यक्ष।
- 1964-66 शिक्षा आयोग के अध्यक्ष।
- 1947 यू.जी.सी. के अध्यक्ष।
- 1964-66 शिक्षा आयोग के अध्यक्ष।
- 1973 UGC के अध्यक्ष
- भारत सरकार पद्म विभूषण।
- न्यूक्लियर एक्स प्लॉजन एण्ड देयर इफक्ट्स।
- वैज्ञानिक के रूप में श्वेतवामन तारों, दबाव के तहत अण्डुओं के आयनीकरण की प्रक्रिया एवं परमाणु विखण्डन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान।

नगेन्द्र सिंह कोठारी

- जन्म- डुंगरपुर 1914
- राजस्थान का नगीना
- कानून के ज्ञाता
- भारतीय संविधान सभा के सदस्य
- अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग के एक बार मुख्य न्यायाधीश (1983), दो बार जज।
- 1973 ई. पद्म विभूषण।
- 1988 हौलेण्ड में निधन।
- 'द थ्योरी ऑफ फोर्स इन हिन्दू पॉलिटी'
- टर्मिनेशन ऑफ मेम्बर शिप ऑफ इन्टर नेशनल ऑर्गेनाइजेशन
- न्यूक्लियर वेपन्स एण्ड इन्टरनेशनल लॉ।

हनुमान प्रसाद पोहदार

- जन्म-रतनगढ़ (चुरू) 17 सितम्बर, 1892।
- देश के एकमात्र व्यक्ति जिन्होंने भारत रत्न लेने से मना कर दिया।
- इनके द्वारा 15 हजार पृष्ठों का साहित्य 86 पुस्तकों में रचित
- गीताप्रेस गोरखपुर की पुस्तक 'कल्याण' का संपादन।
- भारत चीनी आक्रमण के समय इन्होंने 'चीन दमन की साधना असैर सिर्ठ' नामक कविता लिखी।
- स्त्री धर्म प्रश्नोत्तरी उनकी प्रसिद्ध पुस्तक।

समाचार पत्र	सन्	स्थान	प्रकाशक
सज्जन कीर्ति सुधारक (प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र)	1876	उदयपुर	महाराणा सज्जनसिंह
राजस्थान समाचार (प्रथम हिन्दी दैनिक)	1889	अजमेर	मुशी समर्थदान
देश हितेषी	1882	अजमेर	मुन्नालाल शर्मा
नवीन राजस्थान	1922	अजमेर	विजयसिंह पथिक,
तरूण राजस्थान	1923	ब्यावर	जयनारायण व्यास
राजस्थान केसरी	1920	वर्धा	विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी
प्रताप	1910	कानपुर	गणेश शंकर विद्यार्थी
राजपूताना गजट	1835	अजमेर	मुराद अली
नवज्योति	1936	अजमेर	कप्तान दुर्गा प्रसाद
आगीबाण (राजस्थानी भाषा का प्रथम)	1932	ब्यावर	जयनारायण व्यास
अखंड भारत	1936	बंबई	जयनारायण व्यास
औदुबर, नवजीवन	1936	अजमेर	हरिभाऊ उपाध्याय
लोक सेवक	-	कोटा	अभिन्नहरि
लोकवाणी (साप्ताहिक)	1943	जयपुर	पं. देवीशंकर तिवाड़ी
प्रजा सेवक	1940	जोधपुर	अचलेश्वर प्रसाद शर्मा
दैनिक रियासती	1940	जोधपुर	सुमनेश जोशी
ललकार	-	बीकानेर	रघुवीर गोयल
राजस्थान पत्रिका	1956	जयपुर	कपूर चंद कुलिश
राजस्थान	1923	ब्यावर	ऋषि दत्त मेहता
जयभूमि	1940	जयपुर	गुलाब चंद काला
राजस्थान टाइम (इंग्लिश)	-	जयपुर	वासुदेव शर्मा

राजस्थान की रियासतें व 1818 की सन्धियाँ

- बून्दी उत्तराधिकार संघर्ष व गिंगोली के युद्ध ने मराठों व पिण्डारियों को राजपूताना में आमंत्रित कर दिया जो कालान्तर में रियासती शासकों के लिए सिर दर्द बन गए।
- मराठों व पिण्डारियों के भय ने ही 1818 की सन्धियों को जन्म दिया।
- सबसे पहले सन्धि का असफल प्रयास करने वाला राजपूत शासक विजयसिंह था, (राठौडवंश) जबकि सवाई प्रतापसिंह ने 3 बार असफल प्रयास किया।
- 1803के 'सुर्जन-अर्जुन गाँव की सन्धि' (अंग्रेजों व मराठों) ने ई.आई.सी. (ईस्ट इण्डिया कंपनी) राजपूत रियासत की सन्धि का मार्ग प्रशस्त किया।

ये सन्धियाँ दो चरणों में पूर्ण हुई।

मैत्रीपूर्ण व आक्रमण सन्धि (1803)
- **भरतपुर** 1803
- **अलवर** 1803

आश्रित पार्थिक्य सन्धि (1817-1818)
- **कोटा** सित.1818
- **करौली** नव. 1818

- **मैत्रीपूर्ण व आक्रमक सन्धि लार्ड वेलेजली** की सन् **1798** की **सहायक सन्धि** का परिणाम थी जिसे राजपूताना में लार्डलेक ने सबसे पहले भरतपुर पर प्रयोग किया।
- **आश्रित पार्थिक्य सन्धि** (1818) लार्ड हेस्टिंग की नीतियों का परिणाम थी जिसे राजपूताना में लार्ड मेटकॉफ ने सभी रियासतों में क्रियान्वित किया।
- भरतपुर रियासत ने सन्धि तो स्वीकार की लेकिन क्रियान्वित नहीं की जबकि अलवर रियासत ने इसे स्वीकार भी किया और क्रियान्वित भी किया।
- कोटा रियासत आश्रित पार्थिक्य सन्धि को 26 सितम्बर 1817 को स्वीकार किया लेकिन इसका क्रियान्वयन 26 दिसम्बर 1817 को किया।
- करौली रियासत ने आश्रित पार्थिक्य सन्धि को 9 नवम्बर 1817 को स्वीकार किया और इसकी क्रियान्वित 15 नवम्बर 1817 को कर दी।
- इस समय कोटा कि शासन की बागडोर जालिमसिंह झाला के हाथ में जबकि करौली का शासक हरवक्षपाल था।
- 1817-1818 की सन्धियों के परिणामस्वरूप 1817 में अमीर खां पिण्डारी ने टोंक में, 1838 में मदनसिंह झाला ने झालावाड़ में नई रियासत को जन्म दिया।
- 11 सितम्बर 1823 को सिरोही रियासत के शासक शिवसिंह ने सन्धि पर हस्ताक्षर किये और ऐसा करने वाली यह अन्तिम रियासत थी।
- सन्धियों की शर्तानुसार रियासतों से वसूला जाने वाले खिराज नामक कर से बीकानेर व किशनगढ़ को मुक्त रखा गया था।
- सन्धि का विरोध करने वाली रियासतें-भरतपुर, जोधपुर।
- उल्लेखनीय है कि 1856 की लार्ड डलहौजी की गोद निषेध नीति के फलस्वरूप हड़पी गई रियासत करौली थी।

रियासत	संधि हस्ताक्षर तिथि	क्रियान्वयन तिथि	शासक	प्रतिनिधि
भरतपुर	12 सित. 1803	29 सित. 1803	रणजीतसिंह	लार्ड लेक
अलवर	14 नव. 1803	14 नव. 1803	वख्तावर सिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
प्रतापगढ़	1804	1804	सामंतसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
धौलपुर	1806	1806	कीरतसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
करौली	9 नव. 1817	15 नव. 1817	हरवख्शपाल	चार्ल्स मेटकॉफ
कोटा	26 सित. 1817	26 दिस. 1817	जालिमसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
टोंक	9 नव. 1817	15 नव. 1817	अमीर खाँ	चार्ल्स मेटकॉफ
जोधपुर	6 जन. 1818	6 जन. 1818	मानसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
उदयपुर	13 जन. 1818	22 जन. 1818	भीमसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
बूंदी	10 फरवरी 1818	10 फरवरी 1818	विष्णुसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
बीकानेर	9 मार्च 1818	21 मार्च 1818	सूरतसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
जैसलमेर	2 दिसम्बर 1819	2 दिसम्बर 1819	मूलराज	चार्ल्स मेटकॉफ
किशनगढ़	7 अप्रैल 1818	7 अप्रैल 1818	कल्याणसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
जयपुर	2 अप्रैल 1818	2 अप्रैल 1818	जगतसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
सिरोही	11 सित. 1823	11 सित. 1823	शिवसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
बांसवाड़ा	1818	1818	उम्मेदसिंह	चार्ल्स मेटकॉफ
झालावाड़	18 अप्रैल 1838	18 अप्रैल 1838	मदनसिंह झाला	चार्ल्स मेटकॉफ

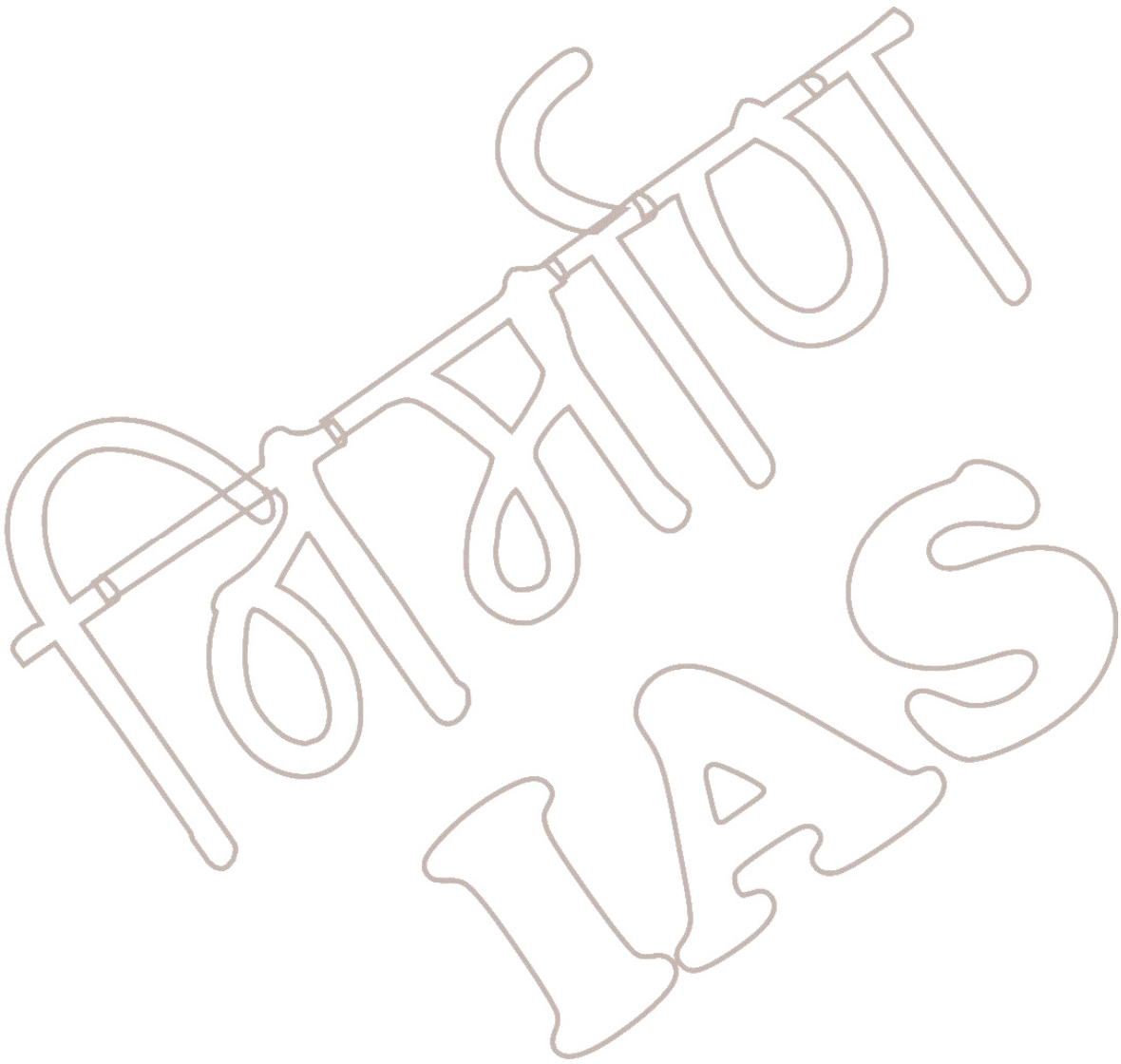
निर्माण
IAS